संवेदनाएँ

– अश्विनी रॉय सहर

दो शब्द

संवेदनाएँ लेखन की मोहताज नहीं होती और न ही ये किसी पुस्तक में समा सकती हैं. ये दिन या रात किसी भी समय जन्म ले सकती हैं. संवेदनाएँ किसी भी स्थान एवं परिस्थितियों में उत्पन्न हो सकती हैं परन्तु ये कभी नहीं मरती. हाँ, इन्हें भुलाने की कोशिश अवश्य की जा सकती है. इनके मस्तिष्क में आगमन पर लेखन–सामग्री उपलब्ध न हो तो इन्हें भूलने की नौबत भी आ सकती है हालांकि कुछ संवेदनाएँ इतनी शक्तिशाली होती हैं कि उन्हें काफी समय बाद भी कलमबद्ध किया जा सकता है. जब कोई संवेदना उत्पन्न होती है तो मस्तिष्क में कुछ और नहीं होता. जिस तरह से मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों का अनुभव करते हैं उसी तरह संवेदनाएँ भी चेतन अथवा अवचेतन मस्तिष्क की एक सहज अभिव्यक्ति ही हैं जो विभिन्न प्रकार के विचारों की प्रतिक्रिया–स्वरुप प्राप्त होती है. संवेदनाओं को किसी काल–खंड या स्थान के आधार पर वर्गीकृत करना दुष्कर हो सकता है, अतः इन्हें विषयानुसार विभिन्न खण्डों में बाँट दिया है. कहीं–कहीं संवेदनाओं का सन्दर्भ से जुड़ना भी नितांत आवश्यक है. जहाँ ऐसा करना आवश्यक था वहाँ उस सन्दर्भ का उल्लेख भी किया गया है जिसके अंतर्गत कोई संवेदना शब्दों में ढली थी. संवेदनाओं को प्रकट करने हेतु किसी मात्रक इकाई की आवश्यकता नहीं होती. संवेदना व्याकरण के कठिन मापदंडों का अनुसरण करे, यह भी आवश्यक नहीं है. संवेदना के माध्यम से कोई लेखक अपनी खीज मिटा सकता है या अपना विरोध भी प्रकट कर सकता है हालांकि ऐसा करते समय भाषा की गरिमा का ध्यान रखना तो आवश्यक होता ही है. संवेदना आधारित कविताएँ छंद–बद्ध अथवा छंद–रहित भी हो सकती हैं. यह तो लेखक की सोच पर ही निर्भर करता है कि लेखन के समय संवेदना का ख्याल छंदबद्ध था या छंद–रहित! संवेदनाएँ हिंदी में लिखने का कोई विशेष कारण तो नहीं है किन्तु लेखक इन्हें अपनी मातृभाषा के अत्यंत निकट देखता है. इन संवेदनाओं ने आपको कितना प्रभावित किया, यह व्यक्ति विशेष की अभिरुचि एवं उसकी संवेदनशीलता पर निर्भर करता है. आशा है कि लेखक की तरह पाठक वर्ग भी इनके प्रति उतना ही सचेत एवं संवेदनशील होगा!

लेखक

राष्ट्रीय संवेदनाएँ

मेरा वतन

मुझे आज मेरा वतन याद आया
भूला ही कहाँ था जो फिर याद आया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
दोस्तों से मुलाकातें वो मोहब्बत की बातें
ठण्डी ठण्डी बयार में गुजरती थी रातें।
था सब कुछ तो अपना नहीं कुछ पराया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
वो माँ की दुलारें अपनों की मनुहारें
कभी नर्म धूप और फिर ठण्डी बौछारें।
हर शाख पर थी रौनक हर गुँचा मुस्कुराया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
कोयल के सुरों में वो सावन के हसीं झूले
कितना ही भुलाया मगर फिर भी नहीं भूले।
जैसे ही घटा बरसी बरबस वो याद आया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
पलपल में शोख मस्ती हर लम्हा हसीन
रहते थे मिलकर ऐसे जिंदगी थी पुरस्कून।
न जाने किस घड़ी मैं अपना घर छोड़ आया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
वो दिलकश अदाएं देखते ही मुस्कुराना
जाते हो तो सुनो जी घर जल्दी लौट आना।
उठते ही रोज सुबह उसका खयाल आया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
भूला ही नहीं मुझको अब तक भी वो मंजर
वो जुदाई के लम्हे थे जैसे कोई खंजर।
न चाहते हुए भी मैं वहाँ सबको छोड़ आया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।
वो अहिंसा की धरती है जो अमन की निशानी
कही जो बात सबने हमने भी वही मानी।
मुझे नाज़ इस पर मैं हूँ भारत का जाया
मुझे आज मेरा वतन याद आया।

(उपर्युक्त कविता का लेखन विदेशी धरती पर हुआ है)

हिन्दी

भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है
सब हिन्दी में बातें करें, अब हिन्दी में ही लिखा करें.

प्राचीनतम यहाँ सभ्यता, विविधता में जहां एकता
दुनियां में इस का नाम है, यह मेरा देश महान है.
भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है.

हम यूं बोलते कई बोलियाँ, फिर भी दूरियाँ हैं दरमियाँ
लोगों को अपने ये जोड़ती, यही एकता की मिसाल है.
भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है.

आजाद हम और देश आजाद, मिलकर कहें सब जिंदाबाद
हिन्दी में सब की आन है, हिन्दी से सब की शान है.
भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है.

गूंजेगी अब यह चारों ओर, आएगी लेकर नई सी भोर
हर जगह चर्चा ये आम है, अब हिन्दी सुबहो–शाम है.
भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है.

हिन्दी दिलों को जोड़ती, मुल्कों की सरहदें तोड़ती
हिन्दी से अदभुत शान है, जो हिन्द की पहचान है.
भारत की एक जुबान है, यह मेरे देश की शान है.
आओ हिन्दी में बातें करें, अब हिन्दी में ही लिखा करें.

हिंदी का सम्मान करें!

भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

इसने हमें पढ़ना सिखाया, जीवन में बढ़ना सिखाया
हिंदी से शान है सबकी, यह भाषा है जन–जन की.
भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

हिंदी से हिंद कहलाया, सब जन का मान बढ़ाया
यह भारत है हम सबका, जो गौरव है इस जग का.
भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

अंग्रेजो भारत छोड़ो, जय हिंद कहो सब मिलकर
आजादी का हर इक नारा, गूंजा केवल हिंदी में.
भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

कई प्रांत कई भाषाएँ, कई मजहब कई संस्थाएँ
जब एकता मन में आए, तो हिंदी ही सबको भाए.
भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

भारत के रहने वालो, आओ हिंदी में बात करें
है ये अपनी माँ की भाषा, आओ इसका सम्मान करें!

हिन्दी हैं हम

यूं तो कौमी एकता में
हिन्दी का
किरदार नुमाया है
लेकिन उर्दू ने
अलिफ से ये तक
अपना साथ निभाया है
देखो!
हिन्दी ने कितना बड़ा
दिलो जिगर पाया है
इसने न जाने कितने
उर्दू लफ्जों को अपनाया है
हर मुश्किल बोलचाल में
इसने आसान की है
मुल्क में तरक्की की राह
हमवार की है
इसके इस्तेमाल से
हिन्दी में नई रवानी है
जो जुबाने हिंद की
खूबसूरत कहानी है
कहते हैं
हिन्दी से हिन्दुस्तान की
पहचान होती है
दुनिया में ये हकीकत
हर जुबां से बयान होती है
यूं तो हमारे मुल्क में
कई जुबानें बोलते हैं
मगर भाई चारे की खातिर
सब हिन्दी बोलते हैं
बाहरी मुल्कों से बेशक हम
अपनी बात
अंग्रेजी में करते हैं
जनाब!
हिन्दी हैं
हम वतन हैं
हिन्दुस्तान में रहते हैं.

दिलों को जीतो

समझ नहीं आता कि
क्यूं बोलते हैं सारे जहां के लोग
एक ही भाषा में
क्या इसीलिए कि झूठ व कपट की
भाषा सब जगह एक समान है।
क्यूं डरता है मानव, मानव से
क्या इसीलिए कि मानव, मानव नहीं
दानव बन गया हैं।
क्यूं भूखे मरते हैं लोग आज भी
क्या इसीलिए कि कुछ लोगों की भूख
बहुत अधिक बढ़ गई है।
क्यूं झगड़ते है मेरे देश के लोग
क्या इसीलिए कि सब अपने अपने
स्वार्थ में अन्धे हो गए है।
क्यूं लड़ते हैं दो देश आपस में
क्या इसीलिए कि वे चाहते है
सारे जहां में उनका राज हो।
आखिर कब तक चलेगा यह सिलसिला
खून बहेगा कब तक मानवता का
जब कोई नहीं बचेगा इस युद्व में
तो कौन जीतेगा किसको
और राज करेगा कौन किस पर?
जीतना ही है तो दिलों को जीतो
राज करो केवल दिलों पर दुनिया पर नहीं
दुनिया पर राज करने की चाहत में
न जाने कितने लोग उठ गए हैं इस दुनिया से।

आओ मनाएँ इस बार दीवाली

आओ सजाएँ इस बार दीवाली
दिए या मोमबत्तियों से नहीं
बल्कि साक्षरता के प्रसार से
बनेगी सब के लिए प्रकाशमान दीवाली।
आओ खेले इस बार दीवाली
आतिशबाजी या पटाखों से नहीं
बल्कि बालश्रम मुक्ति से
और भी सुखमय होगी दीवाली।
आओ पूजे इस बार दीवाली
प्रदूषण व शोर मचा कर नहीं
बल्कि स्वच्छ एवं शान्त वातावरण में
देवों के आगमन से रोशन होगी दीवाली।
आओ संवारें इस बार दीवाली
दिखावे की सजावट से नहीं
बल्कि सादगी एवं पवित्रता से
और भी शालीन हो जाएगी दीवाली।
आओ मनाएँ इस बार दीवाली
मिठाइयों या पकवानो से नहीं
बल्कि मित्रों में मुस्कान बाँट कर
और भी रंग बिरंगी होगी दीवाली।
आओ दिखाएँ इस बार दीवाली
शराब या जुआ खेलकर नहीं
बल्कि सभी बुरे काम छोड़ने का व्रत लेकर
और भी सुरमय हो जाएगी दीवाली।
आओ देखें इस बार दीवाली
केवल अपनी ही आंखों से नहीं
बल्कि नेत्रदान संकल्प कर के
जीवनोपरान्त भी जगमग होगी दीवाली।

मेरा देश

न जाने मेरे देश को क्या हो गया है
इसका महान् अतीत कहीं पर खो गया है।

रहते थे मिल–जुलकर सारे
हिन्दू–मुस्लिम भाई–भाई।
न जाने इनका कहीं कुछ खो गया है
रंग खून का अब तो सफेद हो गया है
न जाने मेरे देश को क्या हो गया है
इसका महान् अतीत कहीं पर खो गया है।

आजादी की लड़ी थी लड़ाई
कंधे से कंधा जो मिला के
स्वराज का वह हर्ष कहीं पर खो गया है
देखो भाई ही भाई का दुश्मन हो गया है।
न जाने मेरे देश को क्या हो गया है
इसका महान् अतीत कहीं पर खो गया है।

भूख–गरीबी नहीं रहेगी
चारों ओर खुशहाली होगी
होगा फिर यह देश आजाद
मिलकर करेंगे इसको आबाद।
न जाने मेरे देश को क्या हो गया है
इसका महान् अतीत कहीं पर खो गया है।

शत–शत नमन किसान को

देश की खातिर मरते–मिटते, देखो अमर जवान को
खेतों में हरियाली लाए, शत–शत नमन किसान को!

जय जवान की बहादुरी को, शत्रु ने अब पहचाना है
किसानों की मेहनत को, हमने अंतर्मन से जाना है
इनके खून–पसीने ने, चमकाया भारत के भाल को
खेतों में हरियाली लाए, शत–शत नमन किसान को!

गर्मी, सर्दी, आंधी और, बरसात से न घबराते जो
बन प्रहरी इस देश के, सबकी रखवाली करते जो
उसकी भी जय बोलो, जो सम्मान दिलाए देश को
खेतों में हरियाली लाए, शत–शत नमन किसान को!

हरित क्रान्ति के सूत्रधार हैं देश को अन्न खिलाते हैं
भूखा न रह जाए कोई, मेहनत से पसीना बहाते हैं
आओ मिल कर नमन करें भारत के हर किसान को
खेतों में हरियाली लाए, शत–शत नमन किसान को!

देश की खातिर मरते–मिटते, देखो अमर जवान को
खेतों में हरियाली लाए, शत–शत नमन किसान को!

आजादी

आजादी वो नहीं
जो उड़ना चाहे
मगर उड़ न सके!
आजादी वो भी नहीं
जो उड़ने दे खुद को लेकिन
दूसरों के पर नोच ले!
आजादी तो वो है
जो सबको उड़ने दे
एक दूसरे के साथ
और बाँटे भरपूर खुशियाँ
हर किसी के दरमियाँ!
आजादी देह की ही नहीं
बल्कि दिल की भी हो!
आजादी तेरी–मेरी ही नहीं
बल्कि जन–जन की हो!

मानवीय संवेदनाएँ

प्रार्थना

कृपा करो ऐसी मेरे मालिक
अच्छे बंदे बन जाएँ हम
नहीं रहे कोई विद्वेष–भाव
ऐसे मित्र कहलाएँ हम.

एक–दूजे के दर्द को समझें
जीवन पथ पर आगे बढ़ें
छोटा–बड़ा नहीं है कोई
व्यर्थ बहस में नहीं पड़ें.

अच्छा वही जो अच्छा करे
झूठों की परवाह न करे
कृपा करो ऐसी मेरे मालिक
एक दूजे के काम आया करें.

तेरी कृपा के हम आभारी
तुझ को ध्यावें हर पल हम
तेरा तुझ को सौंप के दाता
बस तुझ में खो जाएँ हम.

मैं कोई कवि नहीं

मैं कोई कवि नहीं
न ही पहुॅच सकता हूॅ वहाँ
जहाँ पहुॅच न पाये रवि
मैं कोई कवि नहीं।
जीवन में जब कष्ट न हों
मुख से कोई निकली आह न हो
अर्न्तमन में कोई घाव नहीं
मैं कोई कवि नहीं।
प्रकृति मे कोई निखार न हो
बागों में छाई बहार न हो
पेड़ों पर पंछी गाये नहीं
मैं कोई कवि नहीं
आकाश में छाये बादल न हों
मधुवन में नाचे मोर न हों
बिन बादल के बरसात नहीं
मैं कोई कवि नहीं।
स्वतन्त्रता का संघर्ष न हो
जुल्मों का सहना सहर्ष न हो
फिर भी मन में कोई पीड़ा नहीं
मैं कोई कवि नहीं।
समाज में छोटा बड़ा न हो
छोटी बातों पर अड़ा न हो
आपस में कोई भेद नहीं
मै कोई कवि नहीं।
कवि बहुत है दुनियां में
रहते है बड़ी बड़ी सुविधा में
धन दौलत से भी तृप्ति नहीं
मै कोई कवि नहीं।
असली कवि जहॉ मिलता है
वहॅा रवि भी दुर्लभ रहता है
ढूंढ पाना फिर भी कठिन नहीं
मैं कोई कवि नहीं।

सुख चैन कहाँ है?

सुख चैन कहाँ है?
अहिंसा के नगर में
शान्ति की डगर पे
प्रेम की गंगा बहे जहाँ
सुख चैन वहीं है।
भाई चारा हो जहाँ
हर कोई प्यारा हो वहाँ
चैन की बंशी बजे जहाँ
सुख चैन वहीं है।
अभाव से मुक्त हो
अभय से युक्त हो
स्वतन्त्र समाज है जहाँ
सुख चैन वहीं है।
स्वार्थ से दूर हो
परमार्थ को समर्पित हो
मिले पाप से मुक्ति जहाँ
सुख चैन वहीं है।
न छज्जू के चौबारे
न बल्ख न बुखारे
हमारे सब हों जहाँ
सुख चैन वहीं है।

माया

माया ने ऐसा भरमाया
आँख खुली तो समझ में आया
कौन है अपना कौन पराया
माया ने ऐसा भरमाया.

अपने घर में भी थी रोटी
अच्छी लगती थी ऊँची कोठी
लालच ने तब जोर लगाया
और हम से स्वदेश छुडाया.
माया ने ऐसा भरमाया
आँख खुली तो समझ में आया
कौन है अपना कौन पराया.

धन दौलत अब राज करेगा
कल न किया सो आज करेगा
इसने अपनों से दूर कराया
कुछ ऐसा भ्रम–जाल फैलाया.
माया ने ऐसा भरमाया
आँख खुली तो समझ में आया
कौन है अपना कौन पराया.

माया महाठगिनी हम जानी
लेकिन हम ने कुछ न मानी
इसी को अपना मीत बनाया
जो चाहा सो करके दिखाया.
माया ने ऐसा भरमाया
आँख खुली तो समझ में आया
कौन है अपना कौन पराया.

स्वार्थ में इसने अंधा बनाया
अंतर्मन से लज्जित करवाया
इसने हमको कपट सिखाया
मित्रों ने धोखेबाज बताया.
माया ने ऐसा भरमाया
आँख खुली तो समझ में आया
कौन है अपना कौन पराया.
माया ने ऐसा भरमाया.

सुकून

मैंने देखा है
सुकूं की तलाश में
भटकते हुए
लोगों को
न जाने कहाँ कहाँ
अपनी हसरतों को
पूरा करके
समझ लेते हैं
कि उन्हें
मिल गया है
सुकून
वो शायद
सही नहीं हैं
बहुत कुछ
चाहते हैं लोग
अपनी जिंदगी से
लेकिन अंतहीन
चाहतों की
इस दौड़ में ही
खत्म हो जाती है
ये जिंदगी
फिर भी
नहीं मिलता
उनको सुकून
क्योंकि
सुकूं तो
उसमें है जो
अपने पास है
और जो
अपना ही नहीं है
उसे हासिल करके भी
कैसे मिल पायेगा
सुकून!

लफ्ज

ये न सूझें तो
ठहर सी जाती है
मेरी नब्ज
इनके आने से
महकती है
मेरी जिंदगी
ये ही तो बोलते हैं
मेरे भीतर
इनके बगैर
किस काम का
ये बेजुबान शख्स
सोचता हूँ जब भी
कोई बात मैं
तो उभरते हैं दिमाग में
न जाने कितने अक्स
झांकता हूँ जब भी
मैं अपने माजी में
दीखते हैं हर सूं
ये जज्बाती लफ्ज
न लिखूं तो
बेचैन करते हैं
लिखने ही से तो
दिल को करार आता है
लफ्जों की आवाज से
हाले–दिल बयाँ होता है
लफ्ज देते हैं दस्तक
जब मेरे माजी को
तो आने वाले कल का
खाका तैयार होता है
लफ्ज तय करते हैं
लंबी दूरियां
करीब लाते हैं ये
दो दिलों को
लफ्जों में छुपा है
एक अहसासे–मोहब्बत
जो टूटे दिलों को भी
जोड़ देता है
इनकी कारीगरी का
कोई जवाब नहीं
इनसे है हर चीज
खूबसूरत अहले–दुनिया में!

एक प्रश्न

अक्षम्य अपराध है इनका
इन्होंने कल देखा
एक मासूम का
खून होते हुए
देखा एक अबला की
अस्मत लुटते हुए
और देखा बार–बार
बाल–शोषण होते हुए
फिर भी खामोश रहीं ये
देखा है इन्होंने न जाने
कितने जुल्म होते हुए
लेकिन किया सब अनदेखा
डाली है बुरी नजर
न जाने कितनों पर
और कितनी बार
घोर पापी हैं ये
मिले कठोर दंड इनको
लेकिन करेगा कौन
दंडित इनको
जब एक ही हों
मुंसिफ और मुजरिम
यकीं न आए शायद
क्योंकि ये जुर्म
इन आँखों ने किया है
क्या देगा गवाही ये अंतर्मन
खुद को मान कर दोषी
अगर नहीं तो
फिर कैसे दोगे सजा
अपनी ही आँखों को ?

कल आज और कल

लोग समझते हैं कि
बुजुर्गों की सोच अलग है
उनकी अपनी सोच से
दोनों में फासला है
एक पीढ़ी का
शायद इसीलिए
अपने बुजुर्गों का
वे आदर नहीं करते.
लेकिन वही बुजुर्ग
मुझे बहुत अच्छे लगते हैं
इनकी किसी भी बात पर
गुस्सा नहीं आता.
अनायास ही मैं कल
किसी बुजुर्ग से टकरा गया
हालांकि गलती उनकी थी
फिर भी कुछ न कह पाया
बस मुस्कुरा कर रह गया.
शाम को देखा पार्क में फिर
दो बुजुर्गों को बतियाते हुए
सुना रहे थे शायद
अपनी कथा–व्यथा
एक दूसरे को.
हल्की सी मुस्कान दौड गई
मेरे चेहरे पर
जब मैंने बड़ी हसरत से
देखा एक टक
उन दोनों की ओर
क्योंकि चलता नहीं किसी का
वृद्धावस्था पर जोर.
सुबह सुबह देखा मैंने
फिर एक बुजुर्ग को
छोटे से बच्चे के साथ
घास पर टहलते हुए.
मन ही मन
खुश हो रहा था मैं
क्योंकि वर्तमान ने
देख लिया था आज
अपना बीता हुआ कल
और आने वाला कल !

पेड़ और हम

मेरे घर के सामने
खड़ा है एक पेड़
देखने में सुन्दर
हरा भरा और शान्त
न जाने कब से खड़ा है!
इसने हमारे पुरखों को
जरूर देखा होगा
शायद वो सब भी
खेले होंगे
इसकी छाया में!
सब कुछ बदल गया है आज
यहाँ पर रहने वाले लोग
इस पेड़ के पत्ते और डाली
अगर कुछ नहीं बदला तो
वह है इसकी छाया
मुफ्त में बाँटता है सबको
और देता है सकून
चाहे मौसम सुहाना हो
या तपता हुआ जून!
कितने बदल गए हैं हम लोग
अपने पड़ोसियों को
कभी नहीं मिलते
बिना मतलब के
कोई बात नहीं करते
शायद एक दूसरे को देख
खुश भी न होते हों!
हम को भी
पेड़ जैसा बना दो न
हे सर्वशक्तिमान!
मिलजुल कर रहें
सब खुश
एक ऐसा दो हमें वर
बाँटें सबको प्राण वायु
और मिटा दें
धरती का प्रदूषण
फिर से निर्मल बने
यह वातावरण!
एक दूजे को देख
यूं मुस्कुराएँ कि
अगली पीढ़ी भी
हमें न भूल पाए!

ये लम्हे याद आएँगे

यूं ही मुस्कुराओ तुम
सभी फिर मुस्कुरायेंगे
सब के काम आओ तुम
तो वो भी काम आएँगे
तराने खुशियों के ता–उम्र
फिर हम गुनगुनाएंगे.
भूलो कितना भी इनको
ये लम्हे याद आएँगे.
न पूछो ये किया है क्या
वतन ने आपकी खातिर
मगर जानो जरा ये तुम
किया है क्या इसके लिए
नगमें वफा के सीख लो
जिन्हें सब गुनगुनाएंगे.
भूलो कितना भी इनको
ये लम्हे याद आएँगे.
बुराई का भी बदला यूं
अच्छाई से चुकाना तुम
रहें या ना रहें फिर भी
एक दूजे को याद आएँगे.
सितारे बन आसमां पर
सदा ही टिमटिमाएंगें.
भूलो कितना भी इनको
ये लम्हे याद आएँगे!

आतंकवाद

आंतक का चेहरा बड़ा भयानक
जैसे हो कोई खलनायक।
सारी दुनियां में इसका जाल
कई देशों में इनकी ढाल।
आतंकवाद की कोई न सीमा
सबका चैन हे इसने छीना।
इसने कितनों के घर जलाए
आई मुसीबत बिना बुलाए।
हवाई जहाज अपहरण कराए
मासूमों के सपने चुराए।
इसका नहीं कोई भी मजहब
आंतक फैलाना इसका मकसद।
आओ हम सब आवाज उठाएं
दुनियां भर से इसे मिटाएं।
जब कोई संरक्षक न होगा
तब कैसे यह भक्षक होगा ?

आंतकवाद

लड़ते हो तुम आंतकवाद से
आतंक का ही सहारा लेकर
फैलाना चाहते हो आतंक
लड़ाई का बहाना बना कर।
कब तक चलेगा यह सब आखिर
जाएगी जाने निर्दोष इनकी खातिर
काटोगे कैसे उस पेड़ को तब तक
बैठे रहे हो तुम जिस पर आज तक।
आतंक की जो फसल तुमने है बोई
उसने ही आज सारी प्रतिष्ठा खोई
देते हो ईंट का जवाब पत्थर से
बैठकर शीशे के घर के अन्दर से।
लड़ना ही है तो उन कारकों से लड़ो
आतंकवाद है उपजा जिनसे
बदल डालो वो अपनी विदेश नीतियां
फैलने न पाये कोई असंतोष जिनसे।

अजनबी

कितना अच्छा था
जब तक थे अजनबी
मैं और तुम
न मुझे तुमसे कुछ स्वार्थ था
और न तुम्हें कोई सरोकार
अपनी अपनी राहों पर चलते हुए
न जाने कब और कैसे
एक दूसरे के करीब आ गए
नजदीकियां बढ़ी तो
एक दूजे के दोस्त बन गए
मोहब्बत हुई तो फिर
नफरत भी सर उठाने लगी
स्वार्थ के अँधेरे में डूब कर
न जाने मन में कहाँ विस्फोट हुआ
अचानक दोस्त दुश्मन लगने लगा
क्या दोस्त होना बुरा है?
अजनबी होते हुए
हम कितने अच्छे थे!

मेरा दोस्त

मेरा दोस्त कहीं खो गया है
आपने उसे कहीं देखा है?
मेरे साथ रहता था हर दम
खेलता, कूदता और मुस्कुराता था
न जाने अब कहाँ चला गया है!
मेरा दोस्त कहीं खो गया है
आपने उसे कहीं देखा है?
वो मेरा हमराज था
मुझको उस पर नाज था
उसका अक्स मेरे पास रह गया है!
मेरा दोस्त कहीं खो गया है
आपने उसे कहीं देखा है?
सदा सभी से मिल कर रहना
बुरा लगे तो चुपके से सहना
न जाने क्यों अब असहनीय हो गया है!
मेरा दोस्त कहीं खो गया है
आपने उसे कहीं देखा है?
जिंदगी की इस धूप–छाँव में
चल रहा हूँ अकेला छाले हैं पाँव में
ऐसा लगता है कि वो आ गया है!
मेरा दोस्त कहीं खो गया है
आपने उसे कहीं देखा है?

याद

याद दिलाने से
मुझे याद आया कि
याद करने के लिए
भूलना जरूरी होता है.
अगर भूले ही नहीं
तो याद कैसे करेंगे?
आपको याद होगा कि
मैंने याद किया था
लेकिन अब याद नहीं है कि
मैंने क्यों याद किया!
अगर याद आए तो
मुझे अवश्य बताना कि
याद करने की
क्या वजह हो सकती है!
आपको याद नहीं आया न?
अरे हाँ ! मुझे अब याद आया है
कि मैं आपको भूल गया था...
शायद, इसीलिए याद किया है!

जरा सोचिए!

सोचने से क्या होगा?
अगर नहीं सोचेंगे तो
आपको एक दिन सोचना होगा
कि अगर पहले सोच लेते
तो अब सोचना नहीं पड़ता.
आजकल सोच में डूबे रहते हैं
सोच–सोच कर बेहाल हैं
लेकिन अब सोचने से क्या लाभ?
अगर समय पर सोच लें
तो जीवन भर की सोच
सोचने को मजबूर नहीं करती!

एक बात

किसकी बात चल रही है?
उनकी बात ही कुछ और है
जिनकी बात हम करते हैं.
वो हम से बात न भी करें
फिर भी हम बात करते हैं.
उनकी बात ही कुछ और है
जिनकी बात हम करते हैं!
बात करेंगे तो बात बनेगी
बात न होगी तो क्या होगा?
अब छोडिए न ये सब बातें.
बातों से क्या पेट भरता है?
बात से बात निकलती है.
बात दूर तलक जाती है
बातों में मत उलझाइए.
जाओ, हम बात न करेंगे
बातों से नाराज हो गए!
अब बातों से मान जाइए
बात करने से बाज आइए.
बात–बात पर मत रूठिए
वरना कोई बात न करेगा!

मतलब

मतलब से मिलने में तो कुछ बुरा नहीं है
बेमतलब के मिलने में भी बुरा क्या है?
मतलब से बात की थी, मतलब नहीं निकला
बहुत नादान हूँ, जो इसका मतलब नहीं समझा!

मतलब से बात करते हो, क्या मतलब है?
मतलब, बिना मतलब भी बात किया करो!
उन्हें हमसे मिलने में कोई मतलब नहीं है.
इसका भी तो कोई जरूर मतलब होगा!

कैसे हैं ये लोग?

देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग !

पहले ये अपना बनाते हैं
फिर दिल सबका दुखाते हैं
गिरगिट जैसे रंग बदलें
समझ न पाएं इनका ढोंग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग !

मतलब से बातें करते हैं
वरना ये चुप रहते हैं
कैसे लड़े अब इनसे हम
इनसे बड़ा न कोई रोग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग !

बिना बुलाए आते हैं
हमको रोज लुभाते हैं
हर दम ये चिपके रहते
जैसे छूत का कोई रोग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग!

अजनबी

कितना अच्छा था
जब तक थे अजनबी
मैं और तुम
न मुझे तुमसे कुछ स्वार्थ था
और न तुम्हें कोई सरोकार
अपनी अपनी राहों पर चलते हुए
न जाने कब और कैसे
एक दूसरे के करीब आ गए
नजदीकियां बढ़ी तो
एक दूजे के दोस्त बन गए
मोहब्बत हुई तो फिर
नफरत भी सर उठाने लगी
स्वार्थ के अँधेरे में डूब कर
न जाने मन में कहाँ विस्फोट हुआ
अचानक दोस्त दुश्मन लगने लगा
क्या दोस्त होना बुरा है?
अजनबी होते हुए
हम कितने अच्छे थे!

ये सच है

रोजगार खबरों के तो
सब तलबगार होते हैं
चंद सिफारिशी ही मगर
बा–रोजगार होते हैं!
राहे वफा में यूं तो
आशिक ही शहीद होते हैं
मगर इसके न कहीं
कोई चश्मदीद होते हैं!
मर गए हैं कई लोग
यहाँ पर महामारी से
एक अदद डाक्टर से
कोई इलाज होते हैं!
बच्चे इम्तिहाँ में यूं
अक्सर नकल करते हैं
जैसे वो अपनी ही
अक्ल की बचत करते हैं!

हुआ एक खून और कट गई
फिर से जेब खबरों में
भलाई के किस्से भी कहीं
कोई खबर बनते हैं!
सुना है सिर्फ सच्चाई की
यहाँ पर जीत होती है
मगर लाठी है जिसके पास
उसकी ही भैंस होती है!
हुआ क्या जो सड़ गया
जरा सा अन्न भंडारों में
सुना है आटा गीला तो
सिर्फ कंगाली में होता है!
न देखा न सुना हमने
गधों के सींग होते हैं
भला ऐसी खबरों के कहीं
कोई चिह्न होते हैं!
नहीं होता कोई बेअंत
सिर्फ एक नाम रखने से
वैसे ही अमर को भी
एक दिन मरना ही होता है!

सांप

ये सच है कि
मैं जंगल में रहता था
लेकिन वनों के कटने से
शहर की राह ले ली.
यहाँ चूहे बहुत थे
खाने को भी मिलता था.
फिर एक दिन देखा
मनुष्यों को झगड़ते हुए
एक–दूजे पर विष उगलते हुए
उसकी सोहबत का असर है कि
अब मैं भी विष उगलने लगा हूँ
लोग कहते हैं कि
सांप काटने का इलाज तो है
मगर मनुष्य के काटने का
कोई इलाज नहीं है!

इंसानियत

मेरे दिल की गहराइयों में
लफ्जों के परिंदे चह–चहा रहे हैं
वो आजाद होना चाहते हैं
एक लंबी परवाज के लिए
मेरी आँखों के सामने है
उफ्रुक का वो खूबसूरत नजारा
जहाँ इन लफ्जों के परिंदे
अपना आशियाँ बनाना चाहते हैं
भूख, जुल्म और नफरत से दूर
एक नई दुनिया बसाना चाहते हैं
जहाँ सिर्फ मोहब्बत ही मोहब्बत हो
आदमी एक अच्छा इन्सान बने
और इंसानियत की कद्र करे!

फुहारें

तन को भिगोती
मन को सुहाती
यादों के धुंधले आईने को
साफ करती–रहती फुहारें!
अम्बुआ की छाँव तले
सावन के झूले
कोयलिया के बोल–संग
मधुर गीत गाती फुहारें!
सावन कितने बीत गए
पीछे अपने छूट गए
छवि पिया की निहारती
बिरहा के तीर चुभाती फुहारें!
बदली नभ पर कोई
बन बिजली–सी कौंधती
डर से मन को झकझोरती
सिहरन–सी यूं कंप–कंपाती फुहारें!
जीवन की धूप–छाँव में
अठखेलिया–सी करती
बचपन की भूली याद–सी
फिर नया खेल खेलती फुहारें!

अर्न्तद्वन्द

रहता हूँ अनजान जगह पर
ऐसा लगता है जैसे कोई पेड़
उखाड़ कर उगा दिया हो
एक अजनबी अनजान जगह पर।
फिर भी लहलहाता हूँ मैं
बाँटता हूँ सुख–दुःख लोगों के
यात्रा पर निकलते हैं जो सुदूर
थक कर बैठ जाते है मेरी छाया में
सोचते है आगे बढ़ने की मंजिल पर
दूर करता हूँ इन सब की थकान
फिर सोचता हूँ कि मैं कोई
अजनबी अनजान पथ पर नहीं
सब कुछ देखा–भाला सा है
मैं बोल नहीं सकता तो क्या
सुनता तो हूँ सब की बात
बाँटता हूँ सब में खुशियों के पल
बुझती हो जैसे प्यास बिना जल
सुनकर लोगों की करूण व्यथा
भूल जाता हूँ मैं अपनी वेदना
पाकर प्रेरणा इन सब से फिर
खड़ा रहता हूँ मैं एकदम अडिग
जैसे कभी उखड़ा ही न था!

खुदगर्ज

मेरा किया तो फर्ज है
तुम्हारा किया एहसान
मुझे इस पर हर्ज है !
दोस्ती मेरी इबादत है
तुम्हारे लिए सियासत है
ये कैसी लियाकत है?
वायदे खूब करते हो
लेकिन वफा नहीं करते
खुद को बा–वफा कहते हो?
हमें अपने हाल पे छोड़ दो
बीच हमारे न कोई होड़ हो
गर दीवार है तो उसे तोड़ दो!

तारों की बारात

अंधेरी रात में
तारों की बारात ने
फिर आमंत्रित किया है
सूरज को!
तुम नई सुबह लेकर आना
मेरी रोशनी में
तुम नजर नहीं आते
तुम्हारी रोशनी में
मेरा वजूद खो जाता है.
मुझे देख कर जहां सो जाता है
तुम्हें देख कर ये जाग जाता है.
लेकिन तुम्हारे आने–जाने में
कुछ न कुछ तो खो ही जाता है!

बेटा

इक पत्ता डाल से जुदा हो गया
बेटा माँ–बाप से विदा हो गया!

जब बेटा छोटा बच्चा था
बहुत नादां और अच्छा था
बड़ा हो कर सयाना हो गया
माँ–बाप से बेगाना हो गया.

प्यार से गोद में खेलाया था
बड़े लाड़–चाव से पढ़ाया था
जाने किस पर मन आ गया
वो किसी और को भा गया.

खूब ममता उस पर लुटाई थी
मगर उसको न ये सुहाई थी
भाग्य में था जो लेख लिखा
आखिर वो दिन आ ही गया

बेटा अपनी दुनिया में खुश है
माँ–बाप घर में गुम–सुम हैं
कोई पिछले जन्म के कर्म थे
जिनका बदला लेने आ गया.

इक पत्ता डाल से जुदा हो गया
बेटा माँ–बाप से विदा हो गया!

बेटी बड़ी हो गई है!

देखो, अब बेटी बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खड़ी हो गई है!

समझते थे जिसको सब नादान
आज हो गई है वह कितनी महान
माला की मजबूत कड़ी हो गई है.
देखो अब बेटी बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खड़ी हो गई है!

उसके दम पर घर में बहार है
जैसे चलती कोई ठंडी बयार है
सावन की शीतल झड़ी हो गई है.
देखो, अब बेटी बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खड़ी हो गई है!

घर में सब पर उसका रौब है
पढ़ कर पढ़ाना उसका शौंक है
पथ प्रदर्शक बन खड़ी हो गई है.
देखो अब बेटी बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खड़ी हो गई है!

बेटी ने सभी को जगाया है
घर–आँगन को महकाया है
जीवन की अनमोल घडी हो गई है.
देखो, अब बेटी बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खड़ी हो गई है!

सदियों से बेटे को अपनाया था
अपनी बेटी का दिल दुखाया था
बेटी आज सबसे बड़ी हो गई है
देखो, बेटी सचमुच बड़ी हो गई है
अपने पैरों पर खडी हो गई है!

लेकिन वफा नहीं करते
खुद को बा–वफा कहते हो?
हमें अपने हाल पे छोड़ दो
हमारे बीच न कोई होड़ हो
गर दीवार है तो उसे तोड़ दो!

माँ का फिक्र

माँ को फिक्र है
रोटी खाई या नहीं
भूखा गया था घर से
न जाने किस हाल में होगा?
किसी और को हो न हो
हाँ, माँ को फिक्र है!
पापा ने ड़ांट दिया था
माँ ने दुलार दिया था
मन में कोई विषाद होगा
इसका बार–बार जिक्र है.
हाँ, माँ को फिक्र है!
छोटी–सी बात पर बिगड़ता हूँ
माँ को गुस्सा नहीं आता
मैं खाना–पीना छोड देता हूँ
फिर भी हरदम मुझ पे नजर है
हाँ, माँ को फिक्र है!
अब मैं बड़ा हो गया लेकिन
उसे ही याद करता हूँ
ठोकर खाते ही आवाज आती है
बेटा, जरा देख, संभल कर...
माँ को अब भी फिक्र है!
वो दुनिया में हो, न हो
अपने बच्चों की फिक्र है
जुबाँ पे सबकी, यही जिक्र है
हाँ, माँ को बड़ी फिक्र है!

माँ –1

इक घने हरे–भरे पेड़ की तरह
सबको मुफ़्त छाया देती
मात्र उपस्थिती है जिसकी महान्
जरुरत में जैसे कोई आए काम।
धरती की तरह वह बोझ उठाती
माँ जैसी ममता न कहीं और मिल पाती
जैसे सूर्य आता और जाता है प्रतिदिन
शायद ही वह आराम करती किसी दिन।
हैं खुशियाँ और ग़म ज़माने में मगर
मुस्कुराती है वह सुनहरे कल पर
हो नहीं सकता वह हर कहीं हाज़िर
भेजा ईश्वर ने माँ को यहाँ फिर।
नाम बदले जा सकते हैं अनेक
नहीं रख सकते पर माँ का नाम एक
माँ की महिमा तो न्यारी है
इसलिए तो वह सबको प्यारी है।
पुत्र तो कुपुत्र हो भी सकता है
पर माँ जैसा न कोई हो सकता है!

माँ –2

सब कुछ है मेरे पास
बस इक तुम नहीं हो
ढूँढता हूँ सब जगह
तुम कहीं नहीं हो!
सब कुछ गंवा कर भी
तुझे मैं पा नहीं सकता.
गर मिल जाए मुझे सारा जहां
तो भी तुझे भुला नहीं सकता
गर तुम हो मेरे पास तो
ये दुनिया अपनी है!

मातृ – वियोग

आया जब मैं इस दुनिया में
न जाने क्यों इतना रोया?
बेबस व अकेला इस जग में
रहता था खोया खोया
तेरे प्यार और दुलार ने फिर
मुझ को था हंसना सिखाया।
लगती थी जब चोट मुझको
तो दर्द तुम्हीं को होता था
समा कर तेरी गोद में फिर
मैं खूब चैन से सोता था।
मेरे बीमार होने पर तूने
अपनी नींद व चैन था खोया
जब तुम थी ममता में व्याकुल
तो मैं बेसुध चैन से सोया।
संभाला मुझ को जीवन भर तूने
फिर दामन क्यूं मुझ से छुडाया?
ममता जो लुटाता था अब तक
वह हाथ क्यों मुझ से हटाया?
जीवन भर इतना हंसा कर मुझको
इतना क्यों आज रुलाया?

पापा

कितना अच्छा था पापा–पापा कहना
लेकिन बड़ा मुश्किल है पापा कहाना.
अपना था रोज का वही गोरख–धंधा
मगर अच्छा लगता था बाप का कंधा
बहुत मुश्किल था तब कोई डांट सहना.
कितना अच्छा था पापा–पापा कहना
लेकिन बड़ा मुश्किल है पापा कहाना.
वो टी.वी. में कोई विज्ञापन का देखना
पापा से कहना "मेरे वास्ते भी ये लाना"
और जरा जरा सी बात पे फिर रूठना.
कितना अच्छा था पापा–पापा कहना
लेकिन बड़ा मुश्किल है पापा कहाना.
अक्सर पापा से डांट खा कर रोना
फिर माँ की गोद में जाकर सोना
बस बे–फिकर, हर दम मस्ती करना.
कितना अच्छा था पापा–पापा कहना
लेकिन बड़ा मुश्किल है पापा कहाना.
अब शुरू हो गया है पापा कहाना
ढूँढता रहता हूँ हर दम कोई बहाना
कल वो बहला दिया आज क्या कहना.
कितना अच्छा था पापा–पापा कहना
लेकिन बड़ा मुश्किल है पापा कहाना!

जीवन

कुछ खोया कुछ पाया कैसा जीवन है
लिया और लौटाया बस यही जीवन है!

क्या लेकर थे आए और क्या ले जाना
क्या छीनेगा शमां से कोई परवाना
गया वक्त नहीं फिर आएगा दोबारा
कैसा सुन्दर ये घर अपना उपवन है
कुछ खोया कुछ पाया कैसा जीवन है
लिया और लौटाया बस यही जीवन है!

अपना क्या है और यहाँ क्या बेगाना
लगा हुआ है रोज यहाँ आना जाना
जाएगा कोई पहले या बाद में जाएगा
क्यों इस पर इतराए नश्वर यह तन है
कुछ खोया कुछ पाया कैसा जीवन है
लिया और लौटाया बस यही जीवन है!

मत कर बन्दे तू यहाँ नित मेरी मेरी
रह जाएगी हर चीज यहाँ तेरी न मेरी
फिर कैसा इतराना, खोना और पाना
सबको जाना जग से बस यही जीवन है
कुछ खोया कुछ पाया कैसा जीवन है
लिया और लौटाया बस यही जीवन है!

जरा सोचिए!

सोचने से क्या होगा?
अगर नहीं सोचेंगे तो
एक दिन जरूर सोचना होगा
कि अगर पहले सोच लेते
तो अब सोचना नहीं पड़ता.
आजकल सोच में डूबे रहते हैं
सोच–सोच कर बेहाल हैं
लेकिन अब सोचने से क्या होगा?
अगर समय पर सोच लिया होता
तो जीवन भर की सोच ने
सोचने को मजबूर न किया होता!

याद

अचानक याद दिलाने से
मुझे याद आया कि
याद करने के लिए
भूलना जरूरी होता है.
अगर हम भूले ही नहीं
तो याद कैसे करेंगे?
आपको याद होगा कि
मैंने आपको याद किया था
लेकिन अब याद नहीं है कि
मैंने क्यों याद किया!
अगर आपको याद आए तो
मुझे जरूर बताना कि
आपको याद करने की
क्या वजह हो सकती है!
आपको याद नहीं आया न?
हाँ, मुझे अब याद आ गया है
कि मैं आपको भूल गया था...
और इसीलिए अब याद किया है!

परोपकार

जब मैंने
मखमली घास के
तिनकों से पूछा कि
कैसा लगता है तुम्हें
जब लोग
तुमको रौंद कर
दूर चले जाते हैं...
कष्ट तो होता होगा न
तो आवाज आई
बिलकुल नहीं
अपने ऊपर पड़ने वाले
हर पाँव को
मैं सुकून देता हूँ
जिससे इतनी
खुशी होती है कि
मैं अपना सब दर्द
भूल जाता हूँ!

कबूतर

घर की छत पर
आए बहुत–से
कबूतरों को
कौतूहल–वश
मैं देखने लगा
तो पाया कि
विचित्र प्रेम था सब में
कोई भी
लड़ नहीं रहा था
और न ही कोई
तकरार या झगड़ा
दिखाई दिया उनमें
फिर सोचने लगा कि
मनुष्य को सब कुछ
दिया है ईश्वर ने
फिर भी ये
झगड़ते हैं आपस में
लेकिन
कबूतरों के पास तो
सब कुछ सीमित है
फिर भी ये
प्रेम से रहते हैं
ऐसा लग रहा था
जैसे हमें
मिल–जुल कर
प्रेम से रहने का
पाठ पढ़ा रहे थे
ये कबूतर!

दहशत

जब कोई शख्स
दहशत फैलाता है
तो भूल जाता है
कि उसने
खून कर दिया है
न सिर्फ
अपनी माँ बहन
भाई और बाप का
बल्कि कत्ल किया है
अपनी जमीर का
उसे नहीं मालूम कि
कैसे दिखाई देगी
उसको ये वहशत
जिंदगी के आईने में
शायद
इसी गफलत में
वह फैलाता
जा रहा है
दहशत.

ईर्ष्या

नदी मिली जब सागर में
तो अपनी उपलब्धि पर
खूब लगी वह इतराने
पाकर विशाल आकार
वह लगी खुशी मनाने
तब सागर ने ये बात कही
"कहीं यह मेरे नेकट्य का
कोई दुरुपयोग तो नहीं?"
गुरु से पाकर ज्ञान शिष्य
मन ही मन था सोचता
बाँटूगा मैं ज्ञान एक दिन
यूं सबको बिन मोल का
लेकिन गुरु ने भांप कर
अपने शिष्य से यूं कही
"कहीं यह मेरे नेकट्य का
कोई दुरुपयोग तो नहीं?"
सुन के साधु के प्रवचन
मन हो गया जब शांत
दान महिमा जागृत हुई
पाकर सत्संग का साथ
साधु को यह देख कर
कुछ ईर्ष्या–सी होने लगी
"कहीं यह मेरे नेकट्य का
कोई दुरुपयोग तो नहीं?"

मेरी ख्वाहिश

मेरी हर सांस में हो गुम
जिंदगी की हर धडकन में हो तुम
जीने की हर वजह हो तुम
फिर क्यों भटक रहा हूँ
मैं तेरी तलाश में
जानता हूँ कि
तुम कहीं आस–पास हो
न जाने किस बात पर
मुझसे नाराज हो?
आ जाओ अब तो सामने
कहीं इतनी देर न हो जाए
कि तुम हो करीब मेरे
लेकिन मैं ही हो जाऊँ गुम!

बदलता जमाना

बदलते जमाने के साथ बदला हूँ
फिर भी आज तक नहीं संभला हूँ।
कोई अधिक पुरानी यह बात नहीं
ईमानदारी जैसी न थी कोई बात कहीं
है आज भी झूठों का बोलबाला
सच का तो हो गया जैसे मुँह काला
बदलते जमाने के साथ बदला हूँ
क्या हुआ जो अब तक नहीं संभला हूँ।
मित्र कहलाता था वही जो
मुसीबत में काम आता है
विश्वासघाती मित्र होने से
शत्रु बेहतर कहलाता था
अपने–पराए में हुआ कठिन भेद करना
क्या करें जो सब कुछ इतना बदला।
रहता था बेगानों में ऐसे
जैसे अपनों में रहता हूँ
अपनों का साथ पाकर भी
शिकवा न किसी से करना है
बदलते जमाने के साथ चलना है
संभला जाए या नहीं फिर भी संभलना है।
यह सच है कि जमाने के साथ बदला हूँ
फिर भी मैं आज तक नहीं संभला हूँ।

नई सुबह

मैने देखा एक लड़का
जो गा रहा था गाड़ी में
बजा रहा था सारंगी पर
वह धुने जो थी ज़माने के लिए।
चला जा रहा था बस
अपनी ही धुन में वह
सबका मनोरंजन करता हुआ
मुसीबत का मारा लाचार बेबस वह।
पैबन्द लगे थैले में ढो रहा था
शायद अपनी ग़रीबी
बढ़ा जा रहा था आगे की ओर
अनजान पथ पर वह।
आखिर क्यों होता है यह सब
ज़माने ने बनाया गरीब इसको
होता है मनोरंजन दूसरों का क्यो कर
मिलता है बदले में जो रख लेता है वह।
कौन जाने कब लौटेगें वह दिन
जब गाएगा वह गीत अपने लिए
और रहेगा ज़माने में फिर से ऐसे
मुस्कुराती हुई आती है नई सुबह जैसे।

एक बच्चा

मेरे मन के किसी कोने में
छिपा बैठा है एक बच्चा
जो ड़रता है शायद बड़ा होने से
रहता है भयभीत कुछ खो जाने से ।
बच्चा भेदभाव नहीं करता
छोटे–बड़े या अच्छे–बुरे में।
समझता है वह केवल सच्ची बात
जो है झूठ से कोसों दूर ।
घबराता है पाप कर्म करने से
बच्चा नहीं जानता ज़माने के भेद
ज़िन्दगी में आने वाले दांव–पेंच
करता है बस सीधी–सपाट बात ।
उसे कहाँ छू सकते है व्यर्थ ज़ज्बात
बच्चा जो बहुत छोटा है
नहीं जानता क्यों जग खोटा है
क्यों है ज़माने में अमीरी या गरीबी
करती क्यों लाचार किसी की बदनसीबी ।
नहीं जानता उत्तर इन सब सवालों के
आख़िर ऐसे डरने से क्या होगा
बच्चा भी एक दिन बडा होगा
होगा तब इन प्रश्नों का अन्त ।
अवश्य निकलेगा कोई हल तुरन्त
मिलेगी मुक्ति फिर अनजाने भय से
नहीं डरेगा कोई बच्चा बडा होने से
नहीं हेागा वह भयभीत कुछ भी खोने से।

कल का सपना

कल्पना कीजिए कि हो जाएगा
अमुक काम एक नियत समय पर
तो क्या छोड़ दें हम सब
आज का काम कल पर
कल तो कभी न आएगा
बीत गया आज का दिन
तो फिर कल पछताएगा।
कल्पना भी आने वाला कल है
जिसके बारे में केवल सोच सकते हैं
परन्तु कल तो कुछ नही हो पाएगा।
देखिए सपने नित नए प्रतिदिन
बिताएं समय कार्य कर गिन–गिन
होगा सुनहरा भविष्य फिर सामने
सपने होंगे होंगे साकार जो देखे आपने!

सब समय पर छोड़ दो

क्या होता है जब किसी उत्तर से
उत्पन्न होता है एक नया प्रश्न।
इससे पहले कि हो कोई समस्या हल
समाधान ही आता है नई मुसीबत बन।
गुलामी ने किया था देश बर्बाद
आजादी ने किया इसे फिर से आबाद।
आबादी से बढी जो मुसीबतें
उन सबका हल कहां है?
लड़ता था भाई अपने ही भाई से
जब था एक परिवार में
बंटवारा हो जाने पर भी
झगड़ा सब ज्यों का त्यों है।
बंटवारे से उपजे इस विवाद का
आखिर हल क्या है?
है उचित जवाब देना
ईंट का पत्थर से ही।
लेकिन पत्थर से जो घाव उपजा
उसका ईलाज कहां है?
छोड़ दो सब कुछ समय पर
जिसकी मार से न बच पाया कोई।
हो जाता है स्वयं ठीक
अगर छोड़ दे सब इस पर!

राजस्थानी गीत

आवो सा, पधारो सा
नेहा घणी घर आवो सा!
रात और दिन थारी बाट मैं जोऊं
हिवड़े री पीड़ सूं आपा मैं खोऊं
बेगी थे घर आवो सा. आवो सा, पधारो सा....

थारे बिना म्हाने कुछ नहीं भावे
एकल्यां बैठे म्हारा जी घबरावे
थाने तरस क्यूं नहीं आवे सा. आवो सा, पधारो सा....

प्रेम रो रोग है, सब सूं पुराणा
इण रो भेद, नहीं कोई जाणा
प्रीत री रीत निभावो सा. आवो सा, पधारो सा....

मिलणा– बिछुडना बस में नहीं म्हारे
सुख–दुःख दुनिया सूं टले नहीं टाले.
थाणो फरज निभावो सा. आवो सा, पधारो सा....

एक बात

किसकी बात चल रही है?
उनकी बात ही कुछ और है!
जिनकी बात हम करते हैं.
वो हम से बात न भी करें
हम फिर भी बात करते हैं!
उनकी बात ही कुछ और है
जिनकी बात हम करते हैं
बात करेंगे तो बात बनेगी
बात न होगी तो क्या होगा?
अब छोडिए न ये सब बातें.
बातों से क्या पेट भरता है?
बात से बात निकलती है.
बात दूर तलक जाती है
बातों में मत उलझाइए.
जाओ, हम बात न करेंगे
इतनी बात से नाराज हो गए!
अब बातों से मान जाइए
बात करने से बाज आइए.
बात–बात पर मत रूठिए
वरना कोई बात न करेगा!

कैसे हैं ये लोग?

देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग!

पहले ये अपना बनाते हैं
फिर दिल सबका दुखाते हैं
गिरगिट जैसे रंग बदलें
समझ न पाएं इनका ढोंग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग!

मतलब से बातें करते हैं
वरना ये चुप रहते हैं
कैसे लड़े अब इनसे हम
इनसे बड़ा न कोई रोग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग!

बिना बुलाए आते हैं
हमको रोज लुभाते हैं
हर दम ये चिपके रहते
जैसे छूत का कोई रोग
देखो क्या करते हैं लोग
कैसे– कैसे रचते ढोंग!

हास्य –व्यंग्य संवेदनाएँ

अभी रास्ते में हूँ!

कहता है, आ रहा हूँ
अभी रास्ते में हूँ!
बिस्तर पर लेटा है
नींद में खोया है
जी भर के सोया है
"थोडा और सो लेता हूँ"
इतने में घंटी बजती है
हेलो, आ रहा हूँ मैं
अभी रास्ते में हूँ!
घड़ी में दस बज गए
दफ्तर में देर हो गई
जल्दी से तैयार होना है
अभी नाश्ता भी करना है
अचानक घंटी बजती है
"ऑफिस नहीं आ रहे क्या?"
"बोला आ ही तो रहा हूँ
अभी रास्ते में हूँ!"
जल्दी में शेव नहीं की
रास्ते में हेयर ड्रेसर था
सोचा शेव करवा लेता हूँ
थोड़ी देर ही तो लगेगी
तभी घंटी बजने लगी
"हेलो, एक जरूरी काम है
कहाँ पर मिलेंगे आप?"
"एक जरूरी मीटिंग में हूँ
बाद में बात करता हूँ!"
ये मोबाइल भी बेकार है
काम करने ही नहीं देता
जब देखो बज उठता है
कुछ तो कहना ही पडेगा
"हर बार झूठ बोलता हूँ"
आपको क्या जल्दी है?
"मैं जल्दी आ रहा हूँ
हेलो, अभी रास्ते में हूँ!"

इंतजार

नींद नहीं आई
ख्वाब भी नहीं आया
जाहिर है... तुम कैसे आतीं?
नींद आए तो ख्वाब आए
ख्वाबों में फिर तुम आओ
गर तुम आ गईं तो
लज्जते–इंतजार का क्या होगा?
खुदा न करे कि
मेरी ख्वाहिश पूरी हो!
जो तुम यूं ही आ गईं
तो इंतजार का मजा जाता रहेगा!

पॉलीथीन की थैली

अरे भाई, तूने पॉलीथीन की
थैली यहाँ क्यों गिराई?
पर्यावरण को शुद्ध रखने की
बात मेरे मन को भाई।
पॉलीथीन बहिष्कार जान कर
थैली मैनें यहाँ गिराई!

मासूमियत

एक ऊंटनी और उसका बच्चा
रहते थे जो चिड़ियाघर में
बोला बच्चा मां से इक दिन
क्यूं हैं मेरी गर्दन व टाँगे लम्बी
आंखे ढकी हुई बालों से
पीठ पर एक बड़ा सा कूबड़
पांव ये गद्दीदार हैं क्यों कर ?
ऊँटनी ने बच्चे को बताया
रेगिस्तान का वृतांत सुनाया
बालू में ऐसे पांव न धंसते
ऊँचा होने से दूर तक देख पाते
बाल आंधी से रक्षा करते
कूबड़ अकाल में ऊर्जा देते।
बोला बच्चा मासूमियत से बोल
भेद जरा मां इतना खोल
रेगिस्तान नहीं ये चिड़ियाघर
यहां नहीं आंधी का डर
रेतीली धरती भी नहीं जब यहाँ
तो इन सब की जरुरत है कहाँ ?

एक शहर

यह शहर डूबे तो अच्छा है
इसके डूबने से नदिया धुल जाएगी
प्रदूषण–मुक्त हो जायेगा जल
बह जाएँगी टूटी फूटी सड़कें
ढह जाएँगे कमजोर पुल
बह जायेंगे सभी स्टेडियम
बने हैं जो भ्रष्टाचार के ईडियम
धुल जायेगा सबके मन का मैला
हो जायेगा उजला नेताओं का थैला
धुल जाएगी शहर की गन्दगी
मुस्कराएगी फिर नई जिंदगी
हो जाएँगी धराशायी पुरानी इमारतें
खुलती जाएँगी भ्रष्टाचार की परतें
बह जायेंगे सैलाब में चोर लुटेरे
उजले लगने लगेंगे शाम–सवेरे
एक हो जाएगी फिर सारी बस्ती
यहाँ के झोंपड़े और अमीरों की मस्ती
नहीं रहेगी जब किसी की हस्ती
तब सबको मिलेगी हर चीज सस्ती
फिर से नए पुल व सड़कें बनेंगे
देश में सुन्दर हवादार घर बसेंगे
हटेंगे सारे अवैध कब्जे
सब सड़कें फिर चौड़ी होंगी
नहीं लगेंगे जाम यहाँ–वहाँ
बसें दौडेंगी सरपट यहाँ–वहाँ
परन्तु सवाल तो वही है
क्या वास्तव में आएगी बाढ़
और डूब जाएगा ये शहर?
यारब अब तुम्हीं पर छोड़ता हूँ
तुम्हारी भेजी बाढ़ और आफत
शहर तो भ्रष्ट खेल में डूब ही गया है
शायद इस बारिश में डूबने से बच जाए!

सफर बनाम् सफ़्फ़र

गाड़ी में भीड़ बहुत भारी थी
उस पर गर्मी भी कुछ जारी थी
अभी खाली है बस में जगह आगे
बढ़े चलो बढ़े चलो सब आगे आगे
कहा ऊँचे स्वर में कंडक्टर ने
जो खड़ा था वहाँ तन करके
लेकिन आगे बढ़ने को जगह कहाँ थी
झल्लाकर कहा सवारी ने जो खड़ी वहाँ थी
अब कितने लोग और ले जाओगे
इतनी बस भरके बाद में पछताओगे
गाड़ी जो हुई पंक्चर तो सब यहाँ रह जायेगें
कम सवारी होने पर सब घर तो पहुँच जायेंगे
कहा कंडक्टर ने फिर कड़क कर
सफर कीजिए शान्ति से मगर शोर मत कीजिए
जब तक हमारी भीड़ का बढ़ना जारी रहेगा
तब तक सफर कम सफ़्फ़र ज्यादा करना पडेगा!

चमचों की महिमा

जहां में सबके चहेते चमचे
एक बुलावे पे पहुँचते चमचे.
चाहे कोई काम ही कराना हो
आपके घर पे पहुँचते ये चमचे.
गर इन्हें डांट कर कोई बोले
चाटते आपके तलवे ये चमचे.
कोई इनसे भी तेज काम करे
सहन उसको न करते चमचे.
इनकी दुनिया बड़ी पुरानी है
क्यों नहीं सबको सुहाते चमचे?
इनकी हर बात ही निराली है
कुर्सी के पास ही रहते चमचे.
हर कोई बच के रहे चमचों से
कभी भी साथ छोड़ते चमचे.
इनकी बातों में तुम नहीं आना
बड़े–छोटे कभी न ये होते.
अपनी ड्यूटी से सरोकार नहीं
सारा दिन गप्पे हाँकते चमचे.

पति और पत्नी

पति हमेशा पड़ता था
अपनी पत्नी पर भारी।
बोला तनख्वाह से फिर भी कम
है तुम्हारी मेहनत सारी।
पत्नी बोली भूल गए क्या
सुबह–सवेरे उठकर के जो
चाय मैं तुम्हे पिलाती।
ऑफिस जाते समय टिफिन जो
अपने साथ ले जाते।
लौट के तुम जब वापिस आते
घर आंगन को सुन्दर पाते।
पति हो चाहे कितना भारी
फिर भी रहता है आभारी।
पति में छोटी '**इ**' की मात्रा
पत्नी में बड़ी '**ई**' है आती।
फिर भी दोनो में कौन बड़ा है
समझ तुम्हे यह क्यों न आती!

हिन्दी समारोह

हिन्दी स्वर्ण जयंती का था समारोह
हो चुकी तैयारियाँ इस अवसर के लिए
स्वागत हुआ अतिथि का गायन के साथ
हुई प्रशंसा हिन्दी की फिर हाथों–हाथ।
एक के बाद एक भाषण हुए जारी
क्योंकि मुख्य अतिथि को थी करनी
अपने घर जाने की तैयारी।
देखते ही देखते बारी आ गई ईनामों की
बाँटे गये फिर पुरस्कार व प्रमाण–पत्र तुरन्त
ताकि किया जा सके इस समारोह का अन्त।
हिन्दी प्रेमी अब बाट रहे है जोह
होगा अगली बार कब ऐसा समारोह।

कुँवारा डॉक्टर

बेटी संग पापा गए अस्पताल
दर्द से था उसका बहुत बुरा हाल
ब्रेन में था उसके इक ट्यूमर
जी रहा था फिर भी वह मर–मर.
उन्हें मिल गया एक काबिल सर्जन
बोला कर दूंगा तुरंत ऑपरेशन
आनन–फानन में हुई तैयारी
बेटी भी थी परेशान बेचारी.
दो घंटे में पेशेंट बाहर आया
बेटी ने बाप को गले लगाया
डॉक्टर को उसने दिया धन्यवाद
बोली, ईश्वर तुम्हें रखे नाशाद.
लड़की क्लिनिक में जब भी आती
डॉक्टर साहेब से मिलकर जाती
डॉक्टर तो था अब तक कुँवारा
फिरता था यूं ही मारा–मारा.
मिलने लगे अब दोनों अक्सर
प्यार जगा दोनों के अन्दर
लड़की तो कुछ कह न पाई
डॉक्टर को भी सूझ न आई.
लड़की ने फिर दिल की मानी
उसने कुछ कहने की ठानी
बोली, डॉक्टर सुनो तुम मेरी
उधर हो रही ऑपरेशन में देरी
दोनों की बातें रही अन–सुनी
करते रहे वो यूं–ही अन–मनी
लड़की आए तो पेशेंट भी आए
डॉक्टर से कुछ बन न पाए
चौपट हो गया खेल ही सारा
डॉक्टर बाबू रह गया कुँवारा!

उष्ट्र संवेदनाएँ

उष्ट्र पालन

ऊँट जहाज है देखो कैसा
रेगिस्तान की सैर कराए
चाहे कितना भी हो बोझा
आसानी से मंजिल पहुँचाए!

ऊँटों को खेती में लगाकर
विद्युत ऊर्जा तेल बचाएँ
वायु प्रदूषण बढ़ने न दें
पर्यावरण को शुद्ध बनाएँ!

उष्ट्र दूध से सेहत बनती
रोगों को यह दूर भगाए
स्वादिष्ट दुग्ध उत्पाद बना
सब अपनी आय खूब बढाएँ!

इसकी खाल से जूते बनते
पर्स बैग मन को अति भाएँ
हड्डियों का सामान बना कर
घर अपने को आप सजाएँ!

इसके बालों से रस्सी बनती
चाहे कम्बल और दरी बनाएँ
मूल्य संवर्धित सामान बनाकर
जीवन अपना सफल बनाएँ!

जैव विविधता संरक्षण में
सब मिलकर ये कदम बढ़ाएँ
सघन कृषि व दूध की खातिर
आइये, उष्ट्र पालन अपनाएँ!

ऊँट

ऊँट किस करवट बैठता है
यह कोई नहीं जानता
फिर भी सब कहते हैं देखो
ऊँट किस करवट बैठता है।
ऊँट के मुँह में जीरा
कहते तो सब है
पर नहीं देखा किसी ने
ऊँट को जीरा खाते हुए
ऊँट तो बस खा लेता है
केवल रूखा–सूखा चारा
और रह लेता है कई दिन
बिना पानी पिए हुए
आया ऊँट पहाड़ के नीचे
सुनते तो हैं यह सब
परन्तु देखा नहीं कभी कोई
ऊँट पहाड़ के नीचे दबे हुए
पर देखा है सबने ऊँट को
खेतों में हल जोतते हुए
कुए से पानी भर कर और
सामान गाड़ी में ढोते हुए
क्योकि ऊँट जहाज है रेगिस्तान का।
कहते है, मानते है सब
नहीं ऐसा उपयोगी पशु कोई
यह मैं नहीं आप भी जानते है।

अनुकूलन

ऊँट जहाज़ है रेगिस्तान का
जिसमें अनुकूलन बड़े कमाल का
गर्दन इसकी लम्बी होती
रेतीले टीलों के पार देखने को
पलकें ऑखों की उपयोगी होती।
इसकी पीठ पर बड़ा सा कूबड़
जिसमें वसा एकत्रित रहता
अकाल और सूखे के दिनों में
इसको ऊर्जा व पानी देता।
लम्बी टॉगें व गद्दीदार पाँव
सरपट दोड़े चाहे धूप हो या छाँव
रेतीली राहों की शानदार सवारी
नहीं कोई इससे बढ़कर सफारी।
शरीर है इसका बड़ा गठीला
बनाता इसे जो अत्यन्त फुर्तीला
थोड़े चारे में पेट है भरता
अकाल में सूखी घास ही चरता।
नहीं कोई जानवार इसके जैसा
सहनशील और ताकतवर ऐसा
अभाव में रहता जैसे कोई योगी
नहीं कोई और इतना उपयोगी।
इसके बालों से कम्बल बनते
खाल से सुन्दर बर्तन बनते
हड्डियों से भी सजावट करते
मर कर भी ये बहुत काम आते।

कैसा है यह ऊँट

खा लेता यह रूखा–सूखा
रह लेता कभी यह भूखा
काम मगर फिर भी है आता
मरूभूमि की शान बढ़ाता
ऐसा है यह ऊँट निराला।
वैसे तो होते कई चौपाये
ऊँट जैसा न कोई कर पाये
खेती और सिंचाई करता
गाड़ी में बोझा ले जाता
है कोई इतने काम जो करता?
दूर दूर की सैर कराए
गर्मी से भी न घबराए
सरपट दौड़े मरू धरती पर
सबको इस पर नाज़
जैसे हो रेगिस्तान का जहाज।
काश कि हम भी होते ऐसे
रहता ऊँट मरूस्थल में जैसे
होकर सहनशील हम लोग
बनाते इसे प्रेरणा स्त्रोत
होता फिर सबका आमोद।

आखिर क्या है इस ऊँट में

कुछ तो जरूर है इस ऊँट में
जो दूसरो में अलग सा लगता है।
पेट भर लेता है यह खाकर
मरूभूमि की सूखी घास व झाड़ियां
और रह लेता है कई दिन तक
यह बिना पानी पिए हुए भी
इसका बड़ा कूबड़
दूसरों में अलग सा लगता है।
कुछ तो जरूर है इस ऊँट में
जो दूसरो में अलग सा लगता है।
बोझ ढ़ो लेता है यह अपनी पीठ पर
खींच सकता है गाड़े को गहरी रेत पर
सह लेता है यह तपती गर्मी को भी
और दौड़ लेता है रेगिस्तान में दूर तक
इसके गद्दीदार पांव अलग से लगते है
कुछ तो जरूर है इस ऊँट में
जो दूसरो में अलग सा लगता है।
हल चला सकता है यह खेतों में भी
और सिंचाई करने के भी काम आता है
मरूस्थल की यह जीवन रेखा है
क्या ऐसा कोई जीव आपने देखा हैं ?
इसका गुणकारी दूध अलग सा लगता है
कुछ तो जरूर है इस ऊँट में
जो दूसरो में अलग सा लगता है।
यह राजस्थानी लोक परम्परा की धरोहर है
इसके बिना यहां जीवन अधूरा है
काम आया है यह युद्व और शान्ति में भी
ऐतिहासिक कथाओं में इसका वर्णन है
इसकी कहावतें दूसरों में अलग सी लगती है
कुछ तो जरूर है इस ऊँट में
जो दूसरो में अलग सा लगता है।

मरूभूमि में ऊँट

मरूभूमि में सबका सहारा
ऊँट हमारा, ऊँट हमारा।
ऊँट जहाज है रेगिस्तान का
जानवर है यह बड़े काम का।
दूर दूर की सैर कराए
जितनी भी हो गर्मी सब सह जाए।
इसका दूध बड़ा गुणकारी
ठीक करे जो कई बीमारी।
किसानों के यह हल चलाए
जवानों के भी बहुत काम आये।
अकाल में दे लोगों को सहारा
पिए पानी, कम खाए चारा।
मरूभूमि में सब का सहारा
ऊँट हमारा, ऊँट हमारा।
भारवहन की क्षमता न्यारी
सामान परिवहन व उष्ट्र सफारी
हो संभव सब इसके द्वारा
मरूभूमि में सब का सहारा
ऊँट हमारा, ऊँट हमारा।

मरुस्थल का जहाज

ऊँट जो मरुस्थल का जहाज है,
आज राईका के पास है।
उसकी रोजी–रोटी की आस है,
और करता ये कई काज है।
ऊँट जो मरुस्थल का जहाज है,
आज राईका के पास है।
ऊँट खींचता गाड़ा, अपने मालिक के लिए,
और चलाता हल, किसान की खुषहाली के लिए।
खींचता कुएं से पानी भी,
इस जैसा नहीं कोई दूसरा आज है।
ऊँट जो मरुस्थल का जहाज है,
आज राईका के पास है।
खाता है ये सूखा चारा दिनभर चर के,
रह लेता बिना पानी भी कई दिन तक ये।
साथ फिर भी निभाता है ये,
न होता कभी नाराज है।
ऊँट जो मरुस्थल का जहाज है,
आज राईका के पास है।
ऊँट इतिहास का एक खुला पन्ना है,
किया काम सदियों से जिसने मानव के लिए।
है कितना वफादार जानवर ये,
समझ पाया न इसका कोई राज है।
ऊँट जो मरुस्थल का जहाज है,
आज राईका के पास है।

बेचारा ऊँट

कोई करे कोई भरे
तो बेचारा ऊँट क्या करे?
कृषि भूमि जब बढ़ने लगी
तो चरागाहें कम होने लगी
अब ऊँट चारा कहां चरे?
कोई करे कोई भरे
तो बेचारा ऊँट क्या करे?
परिवहन को आई मोटर गाड़ी
कौन चढ़ेगा अब ऊँट गाड़ी
गाड़ी खींचे बिना ऊँट कैसे टरे?
कोई करे कोई भरे
तो बेचारा ऊँट क्या करे?
मरुस्थली धरा सिमटने लगी
पक्की सड़कें अब बनने लगी
रेगिस्तान ही नहीं होगा जब
तो जहाज क्या करें?
कोई करे कोई भरे
तो बेचारा ऊँट क्या करे?
अब न करे कोई उष्ट्र सवारी
ट्रेक्टर से करवाते सब काम भारी
हुई मंहगी अब चारे की दरें...
तो बेचारा ऊँट क्या करे?
कोई करे कोई भरें
तो बेचारा ऊँट क्या करे?

ये जो ऊँट है न!

ये जो ऊँट है न
रेगिस्तान का जहाज
यही तो लाया है मरुभूमि में
जन जीवन की खुशहाली.
अगर ये न होता तो
कहाँ होते लहलहाते खेत
चहुँ ओर होती आंधी और रेत
कैसे सफर करते लोग
वीरान रेतीले टीलों पर
कैसे लाते नहर मरुस्थल में
जब पीने का पानी भी दुर्लभ था.
थार का कण कण आभारी है
इससे यहाँ हरियाली है
परन्तु यह क्या ?
अपने घर को समृद्ध करने वाला
कैसे हो गया बेकार व निठल्ला
जिसने दिए लाखों रोजगार
वही हो गया खुद बेरोजगार.
ऊँट हमारी धरोहर है
आइये ऊंटों के साथ चलें
प्रगति पथ पर आगे बढ़ें
जब ऊँट ही न रहेगा
तो अकाल का सामना कैसे होगा ?
कौन जोतेगा हमारे खेत
जब नहीं बचेगा खनिज तेल
कैसे होगी सीमा की रखवाली
जब न चलेगी गाडी तेल वाली
जैव–विविधता संरक्षण खातिर
ऊँटो का सहयोग जरुरी है.
ये जो ऊँट है न
रेगिस्तान का जहाज
इसी पर होगा निर्भर अपना
आने वाला कल और आज!

ऊँट गाड़ी

ये सिर्फ ऊँट गाड़ी नहीं है
इसमें है एक ऊँट
और बहुत–सी आशाएं!
गाड़ी पर सवार है रायका
जिसे भरोसा है मुझ पर
चाहे खेत–खलिहान हों या बाजार
बरसों से काम आया हूँ इनके।
अब आपको क्या बताएं?
ये सिर्फ ऊँट गाड़ी नहीं है
इसमें है एक ऊँट
और बहुत–सी आशाएं!
गाड़ी में लदा है भूसा
जो शहर में बिकेगा
बेचने से रूपया मिलेगा
जिससे घर का खर्च चलेगा
अब आपसे क्या छुपाएँ !
ये सिर्फ ऊँट गाड़ी नहीं है
इसमें है एक ऊँट
और बहुत–सी आशाएं!
गाड़ी में बैठे हैं घर के लोग
इन्हें जाना है तीर्थ यात्रा पर
प्रभु कृपा से मन्नतें पूरी हुई हैं
मन में फिर भी हैं अधूरी आशाएं
यह सब आपको कैसे बताएं?
ये सिर्फ ऊँट गाड़ी नहीं है
इसमें है एक ऊँट
और बहुत–सी आशाएं!
इस वर्ष फिर लगेगा ऊँट मेला
विदेशी सैलानी आएँगे यहाँ
ऊँट गाड़ी से घूमने की चाह लिए
रेगिस्तानी धोरे कितने मनोहारी हैं!
यह देखे बिना आपको कैसे बताएं ?
ये सिर्फ ऊँट गाड़ी नहीं है
इसमें है एक ऊँट
और बहुत–सी आशाएं!

क्षणिक संवेदनाएँ

'मैं'

मैं ढूँढता रहता हूँ
'मैं' को अपने अंदर
न जाने कहाँ रहती है वो
जब तक मुझे 'मैं' मिलेगी
शायद 'मैं' ही न रहूँगा!

मैं

मैं कौन हूँ
उसने पूछा
मुझसे
तुम कौन हो ?
मैंने कहा
आप बहुत अच्छे हैं
मगर मैं वो नहीं
जो आप हैं
आप अपने
व्यक्तित्व से
स्वयं को
घटा दें
बस्स ...
जो अधिशेष है
वह मैं हूँ.!

इश्क का नाम

वो भी तो कोई दौर था
तब ये शख्स कुछ और था!
जाते थे हम उसके दर पे
कोई बात नहीं कर पाते थे
अपनी रुसवाई के डर से
लौट के घर फिर आते थे
हम ने जहां में क्या काम किया
बस, इश्क का नाम बदनाम किया!

इंतजार

नींद नहीं आई
ख्वाब भी नहीं आया
जाहिर है, तुम कैसे आतीं!
नींद आए तो ख्वाब आए
ख्वाबों में फिर तुम आओ
गर तुम आ गईं तो
लज्जते–इंतजार का क्या होगा?
खुदा न करे कि
मेरी ख्वाहिश पूरी हो!
जो तुम यूं ही आ गईं
तो इंतजार का मजा जाता रहेगा!

कल

जो लोग
आज का काम
कल पर छोड़ते हैं
उन्हें
मालूम है
कि कल
कभी नहीं आयेगा.
और जो
कल का काम
आज करते हैं
उन्हें
कल का इंतजार
नहीं होता.

कचरा

मुझे समेट लेना
और दफन कर देना
किसी गहरे गड्ढे में क्योंकि
खुद से नफरत है मुझको
मुझसे नफरत है सबको
तो आइए,
सब मिल कर मिटा दें
इस नफरत को सदा के लिए
और निर्माण करें
एक स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत!

वक्त

वक्त वक्त की बात है
कभी उनके पास वक्त था
मगर हमारे पास न था
आज हमारे पास वक्त है
मगर उनके पास नहीं.
वक्त के साथ चलें सब
कही ऐसा न हो कि
वक्त आगे निकल जाए
और हम पीछे छूट जाएँ!

दिन

वो दिन भी क्या दिन थे
हर दिन बे–फिक्र रहते थे!
कैसे दिन आ गए हैं अब?
बीते दिन याद करते हैं!
दिनों का फेर है ऐसा कि
दिन आते हैं चले जाते हैं
अच्छे दिन भूल जाते हैं
तो बुरे दिन याद आते हैं!

बरसात

वह आई
सबको निहाल कर दिया
वह न आई
सबको बेहाल कर दिया
वह जोर से आई
सब बर्बाद कर दिया!

माँ

माँ का दुलार
स्नेह अपार
माँ की प्रशंसा
सब जन की मंशा!

गरीबी

भूख अन्न की नहीं
धन की है
गरीबी तन की नहीं
मन की है!

मानवता
मानव भ्रष्ट है
मानवता त्रस्त है.
दूर तक जहाँ देखो
कष्ट ही कष्ट हैं.

सूखा
उसकी बेरुखी का 'सूखा'
रह गया हर कोई भूखा.

खुदा
होश आता है सभी को
सब खो जाने के बाद
याद आता है खुदा सबको
सब लुट जाने के बाद.

नसीहत
ऐ, दूसरों पे हँसने वाले
एक दिन खुद पर हँसना
बहुत मजा आएगा!
कभी किसी कमजोर पर
न हँस देना, बुरा है ये
बहुत सजा पाएगा!

बरसात
वह आई
सबको निहाल कर दिया
वह न आई
सबको बेहाल कर दिया
वह जोर से आई
सब बर्बाद कर दिया.

अच्छे बच्चे
बीते हुए कल के वो बच्चे
भोले–भाले और सीधे–सच्चे.
लेकिन आजकल के बच्चे
चतुर–सुजान, कान के कच्चे.
हम भी तो कभी होते थे
इन्हीं की तरह बहुत अच्छे.
सब के मन को भाते हैं
मन–मोहक, सुन्दर बच्चे!

क्षणिकाएँ

1
जब हर शय सस्ती
तो कैसी मस्ती
गर हो महँगाई
फिर कैसे बजे शहनाई!

2
अमीर की
ठोकर में है नौकर
जिसके लिए है
दर दर की ठोकर!

3
बुद्धिमान मनुष्य है
गागर में सागर
और मूर्ख है
सागर में गागर!

4
सब पर है
उसकी नजर
जो नहीं आता
किसी को नजर!

(5)
सोचिए
डाउन टू अर्थ
अन्यथा
सब कुछ व्यर्थ!

(6)
हमेशा
आभार
प्रकट करें
ताकि न रहे कोई
भार!

(7)
समता का पर्याय
ही तो है
हर माँ की ममता!

(8)
प्रेम में है
विश्वास और
नफरत में है
विष का वास!

(9)
सर्द मौसम में
वर्षा की
ठण्डी आहट
यही तो है मावठ!
(10)
पेड़ लगें तो
वन महोत्सव
पेड़ कटें तो
नवनिर्माण उत्सव!
(11)
सपना सजा
दिखा रहा वो सब
जो न अपना!
(12)
उम्र छोटी–सी
पानी के बुलबुले
बने व फूटे!
(13)
अनिद्रा रोग
बुलाता है मित्रों को
या तनाव को?
(14)
धरती पुत्र
उड़ने की चाहत
मानव जो है!
(15)
याद आती हैं
वो सुहावनी रातें
बीते वो पल!
(16)
तितली नहीं
आंधी में वृक्ष गिरे
जीना सबको!
(17)
प्रेम से बोलें
ये मीठी भाषा यहाँ
हम सिखाएं?
(18)
प्रेम व घृणा
दोनों ही चलें साथ
ऐसा होता है!

(19)
अच्छा या बुरा
शिकायत तो होगी
न जाने कहाँ?
(20)
कहीं न रहे कोई
पीड़ा या क्रंदन
आपके लिए
नूतन वर्ष
अभिनन्दन.
(21)
जो लोग
आज का काम
कल पर छोड़ते हैं
उन्हें
मालूम है
कि कल
कभी नहीं आयेगा.
और जो
कल का काम
आज करते हैं
उन्हें
कल का इंतजार
नहीं होता.
(22)
बरसें बादल
तो
दल–दल
अन्यथा
हर कोई रहे
निर्जल.
(23)
सोना हो
तो
कैसा सोना
सोना नहीं
तो
खूब सोना!

विविध संवेदनाएँ

नया साल मनाएँ

गए साल की बीती यादें
नया इतिहास बनाएँ
आओ हम सब मिल–जुल कर
यह नया साल मनाएँ।
चारों ओर हरियाली होगी
देश में तब खुशहाली होगी
जन–गण के जीवन को हम सब
सुखमय आदर्श बनाएँ।
आओ हम सब मिल–जुल कर
यह नया साल मनाएँ।
स्वास्थ्य जीवन का रक्षक होगा
स्वाध्याय हमारा लक्ष्य होगा
ऊँच–नीच के भेद मिटाकर
एक नया समाज बनाएँ।
आओ हम सब मिल–जुल कर
यह नया साल मनाएँ।
समय तो यूँ ही चलता रहेगा
जो दुःख कल था कल न रहेगा
नए साल की पहली सुबह का
अभिनंदन गान हम गाएँ ।
आओ हम सब मिल–जुल कर
यह नया साल मनाएँ।

नव वर्ष बेला

ऐ गत वर्ष हमने तुझे खूब है झेला
किया तूने हर दम नया ही झमेला
कभी लाया अकाल कभी आपदाओं का मेला
कर दिया न जाने कितने लोगों को अकेला।
आई है आज देखो यह नव वर्ष बेला
लगा है चारों ओर खुशियों का मेला
ऐसे में फिर क्यूं हो कोई अकेला
झूमें सब खुशी से गुरू हो या चेला।
खुशियाँ लहराएँ चारों ओर हमारे
छाए रहें यूं ही रंग–बिरंगें नजारे
खिले हों हर कहीं खूबसूरत गुल
मनाते रहें खुशियां सब मिल–जुल।
मस्ती हो धूम हो हमारे चारों ओर
गमों के लिए हो न कोई भी ठौर
नए साल पर सब नए गीत गाएँ
बाँटें खुशियाँ हर पल सदा मुस्कुराएँ।

कैसी हो कविता

जिस कविता में कोई दर्द न हो
कोई आह न हो कोई चाह न हो
पढ़–सुनकर हृदय द्रवित नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जिसमे मातृत्व की करूणा न हो
मॉ की ममता का झरना न हो
बहती अश्रु की धार नहीं
यह कोई कविता हुई नही।
प्रकृति का रूप श्रगांर न हो
रिमझिम करती बरसात न हो
दिल गाकर जिसको झूमें नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जिसके शब्दों में महक न हो
उड़ते पंछी की चहक न हो
फूलों जैसी कोई खुशबू नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जिसमें जीवन की सच्चाई न हो
दुनियां की अच्छाई–बुराई न हो
कहने का कोई भाव नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जिसमें समाज दपर्ण न हो
और राष्ट्र प्रेम अर्पण न हो
निस्वार्थ सेवा अनुभूति नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जो लोहे को पिघला न सके
और शत्रु को दहला न सके
कोई क्रान्ति या बदलाव नहीं
यह कोई कविता हुई नहीं।
जिसमें अविरल देश भक्ति नहीं
एकता में बांधने की शक्ति नहीं
स्वतन्त्रता की पुकार नहीं
यह कोई कविता हुई नही।

ऐसे होती है कविता

सुबह सवेरे आसमां पर जब लालिमा होती है
करते हैं खग कलरव तो फिर कविता होती है।
पिघल कर बर्फ पहाड़ों से जब झरना बनती है
बहता है पानी झर झर कर तो कविता होती है।
छाए घटा घन –घोर तो फिर बरसात होती है
नाचे ऐसे में मोर तो वह कविता होती है।
खिले बागों में फूल तो बहार आती है
गुनगुनाएं भंवरे कलियों पर तो वह कविता होती है।
परोपकार से तो दूसरों की भलाई होती है
जब हो जन जन की सेवा तो फिर कविता होती है।
कहने को तो अनाज की फसल भरपूर होती है
खाएं सब देश में भरपेट तो फिर कविता होती है।
मुस्कराएं सुखों में तो न कोई बात होती है
गम मे भी जो न घबराएं तो फिर कविता होती है।
देखें दर्पण में तो अपनी तस्वीर होती है
''दिल में क्या है'' जो दिखाए तो फिर कविता होती है।
यूं तो ईमानदारी सर्वोत्तम नीति होती है
हों बेईमान अगर दण्डित तो फिर कविता होती है।

मिलावट

शान्ति से बैठो तो लगता है कोई आहट है
आजकल ज़माने में सब जगह मिलावट है।
पेट्रोल में डीज़ल की व डीज़ल में तेल की
हवा में धुएं की और धुएं में शोर की
ज़माने में सब जगह मिलावट है।
लाभ में हानि की व ईमान में बेईमानी की
तृप्ति में लोभ की और लोभ में मोह की
ज़माने में सब जगह मिलावट है।
प्रेम में घृणा की व घृणा में वैर की
वैर में अविश्वास की और सच में झूठ की
ज़माने में सब जगह मिलावट है।
जीवन में मरण की व सुख में दुःख की
भक्ति में स्वार्थ की और त्याग में लगाव की
ज़माने में सब जगह मिलावट है।
शान्ति से बैठो तो लगता है कोई आहट है
आजकल ज़माने में सब जगह मिलावट है।

फेसबुक

अपनों से आपको, दूर ले जाती है फेसबुक
गैरों को भी अपने, करीब लाती है फेसबुक.
जाने कैसा खेल, नित दिखाती है फेसबुक
सब लोगों को दीवाना, बनाती है फेसबुक.
पोस्ट अपडेट नहीं, तो सब सूना लगता है
हर समय पोस्ट–अपडेट करवाती है फेसबुक.
चौन दिन में नहीं, न कोई करार रातों में
चढ़ के सर पे, जादू सा बोलती है फेसबुक.
सांस चलने की इक निशानी है फेसबुक
बंदे के मर जाने की, खामोशी है फेसबुक.
हर जिन्दा दिल की मिसाल है फेसबुक
अच्छी–बुरी खबर का एहवाल है फेसबुक.
जियो और जीने दो की निशानी है फेसबुक
आजकल नौजवानों को प्यारी है फेसबुक!

आओ पेड़ लगाएं

आओ हम सब पेड़ लगाएं
जीवन एक आदर्श बनाएँ!

कहीं भी जाएँ, कहीं से आएं
अपने पेड़ से मिलकर जाएँ
अपनी व्यथा जिसे कह पाएं
ऐसा जीवन–साथी बनाएं.
आओ हम सब पेड़ लगाएं
जीवन एक आदर्श बनाएँ!

पेड़ों से हरियाली आए
जीवन में खुशहाली आए
वर्षा लाएं, प्रदूषण मिटाएं
पेड़ हमारे बहुत काम आएं
आओ हम सब पेड़ लगाएं
जीवन एक आदर्श बनाएँ!

पेड़ों पर निर्भर सब पक्षी
शाकाहारी हों या परभक्षी
पेड़ों की छाया में आकर
सब अपनी थकान मिटाएं
आओ हम सब पेड़ लगाएं
जीवन एक आदर्श बनाएँ!

नन्हे–मुन्ने बच्चे

नन्हे–मुन्ने बच्चे हमारे
लगते सब को प्यारे प्यारे।
जेसे सूरज चांद व तारे
झिल मिल चमके आसमान में।
वैसे ही इनका बचपन महके
हर घर आंगन संसार में।
बच्चों में रहते हैं भगवान
जिसको माने सब इन्सान।
झूठ कभी इन्हे छू नहीं सकता
बचपन इनका भला लगता।
आओ सीखें इनसे सीख
मिलकर रहें तो सब हो ठीक।
एक दूजे से करें ना नफरत
उठकर सुबह करें सब कसरत।
होगें स्वस्थ तो खुशियां होगी
चारों ओर दीवाली होगी।

सबसे बड़ी सीख

चला जा रहा था मैं एक दिन
करने गांव की सैर।
हुई दोपहर जंगल में फिर
नहीं जान की खैर।
थोड़ी देर मे आया हाथी
नहीं था मेरा कोई साथी।
पहले तो कुछ दिल घबराया
बाद में फिर आगे बढ़ पाया।
थोड़ा चलने पर रीछ मिला
उसने तो मुझको देखा नहीं
पर मैनें उसको देख लिया।
याद आई फिर एक कहानी
दो मित्रों की वही पुरानी।
एक मित्र चढ़ गया पेड़ पर
दूजा गया लेट धरती पर।
आया रीछ और गया सूंघ कर
दे गया सब को संदेश नया
विश्वासघाती से बचकर रहना
नहीं कोई सीख इससे बढ़िया।

कुण्डलियाँ सबके लिए!

गहरी नींद में सो रहे भिखमंगे और फकीर
लेकिन करवट बदल रहे, दुनिया के अमीर
दुनिया के अमीर करें क्या करें इनकी बातें
अन्धेरे में हैं दिन और उजली इनकी रातें
कहें सयाने जग में, सुनो रे निर्धन अच्छा
धनी से तो अच्छा होता गरीब का बच्चा!

जल्दी से बूझा करो तुम मतलब की बात
होनहार बिरवान के होते हैं चिकने पात
होते हैं चिकने पात कोई इनको न तोड़े
भूल से भी कोई इनसे मुख न मोडे
देख समय का फेर अरे छोडो नादानी
आएगा जब वक्त तो कर लेना मनमानी!

जग में सबसे विचित्र है निंदा–रस अनमोल
सबको ही मिल जाती है ये वस्तु बिन मोल
ये वस्तु बिन मोल रुपयों की बचत करावे
बचा हुआ रुपय्या देश के काम लगावे!
कहे अश्विनी भाई, सुनो रे जग में सबकी
करना केवल वही, जो है अपने मन की!

कोयल के दोहे

पंछी बहुत हैं बाग में, लेकिन कोयल अनमोल
वाणी जैसे मधुर है, वैसे ही अनोखे बोल!
कोयल जब तू गाए, सब पंछी चुप हो जाएं
ऐसा लगता है मुझे, तेरे गीत सभी को भाएं!
कोयल तेरी कुहू–कुहू, मैं सुनता हूँ दिन–रैन
दरस तेरे को तरस रहे, हर दम मेरे नैन!
कोयल तेरी कूक क्या, जादू–सा असर दिखाए
ऐसी मधुर आवाज में, सब सुध–बुध खो जाए!
कोयलिया तेरी कूक क्यों, मुझको आज रुलाए
गाओ ऐसा गीत जो, साजन की याद दिलाए!
देखो अम्बुआ की डाल पर, कोयल गाए गीत
मिलते–बिछुड़ते रहें सब, यही जगत की रीत!
कोयल तेरे गीत के, कितने मधुर हैं बोल
कैसे गाती हो भला, यह भेद जरा तू खोल!

गीत

देखो देखो, हाँ देखो, हाँ देखो दोस्तो
यूं न देखो, तुम देखो, न देखो दोस्तो.

अच्छी होती, हैं अच्छी, अदाएं दोस्तो
नहीं होती, हैं अच्छी, जफाएं दोस्तो
देखो देखो, हाँ देखो, हाँ देखो दोस्तो
यूं न देखो, तुम देखो, न देखो दोस्तो.

तुम हो अच्छे, तो अच्छी, है दुनिया दोस्तो
वरना कुछ भी, नहीं है, ये दुनिया दोस्तो
देखो देखो, हाँ देखो, हाँ देखो दोस्तो
यूं न देखो, तुम देखो, न देखो दोस्तो.

ये जो नफरत, है नफरत, बुराई दोस्तो
कर लो प्यार, मिटा दो, बुराई दोस्तो
देखो देखो, हाँ देखो, हाँ देखो दोस्तो
यूं न देखो, तुम देखो, न देखो दोस्तो.

जो है तेरा, है मेरा, हाँ मेरा दोस्तो
जो है मेरा, हाँ मेरा, वो सबका दोस्तो
देखो देखो, हाँ देखो, हाँ देखो दोस्तो
यूं न देखो, तुम देखो, न देखो दोस्तो.

जीवन गीत

उम्र गुजर गई यूं ही
यादों के सहारे
कोई हमको भूल गया
किसी को हमने भुला दिया.
उम्र गुजर गई यूं ही...
जीवन में चलते चलते
लोग मिलते रहे
बढ़ने लगे जब आगे
तो फिर कारवां हुआ.
कोई आगे को बढ़ गया
कोई पीछे ही रह गया
कोई हमको भूल गया
किसी को हमने भुला दिया.
उम्र गुजर गई यूं ही...
अपने अपनों का साथ
हर किसी को मिले
सबको मिले वो यार
जो प्यार अच्छा लगे.
यूं ही प्यार करते करते
बस प्यार हो गया
कोई हम को भूल गया
किसी को हमने भुला दिया.
उम्र गुजर गई यूं ही...

दुनिया

कल तक जो तेरी थी वो है मेरी दुनिया
क्यों ऐसे बदल जाती है तेरी दुनिया.
आती नहीं यूं रास सभी को है अक्सर
पल भर में उजड़ जाती है तेरी दुनिया.
कुछ लेना न देना हमें अब और इसको
करती है मगर फिर भी ये सवाल हमसे.
प्यार कितना ही चाहे तुम बेशुमार करो
नफरत को नफरत से लौटाती ये दुनिया.
चलते हैं सदा ही से सब इसके हमराह
साथ छोड़ देती है सबका ये ऐसी दुनिया.
किस्मत पे किसी की जो यूं बन आए
ढाती है सितम फिर भी ये सारी दुनिया.
दुनिया में 'सहर' सब तुम अच्छा करना
बिठाती है सर–आँखों पे ये सारी दुनिया.

तबाही की इन्तेहा

नजरे–इनायत है तेरी कही नहीं जाती
रहमत की दास्ताँ ये कही नहीं जाती.
वो मेरे सामने है लेकिन तिश्नगी भी है
ये फरियाद किसी से कही नहीं जाती.
उसके दामन में फूल हैं और कांटे भी
किस्मत में क्या है ये कही नहीं जाती.
बड़ी उम्मीद लेकर आया हूँ दर पे तेरे
क्या कमी है मुझ में कही नहीं जाती.
दौरे–इबादत चल रहा है यूं देखो 'सहर'
तबाही की इन्तेहा ये कही नहीं जाती.

परमसुख

वो जो एक नाम को सौ सुख कहता है
बेचारा अंधा, खुद को नैनसुख कहता है.
बरस गुजर गए, चेहरे पे हँसी देखे
लेकिन वो खुद को हंसमुख कहता है.
सब कुछ है मगर सकूं नहीं दिल को
देखो उसे वो खुद को मनसुख कहता है.
जिंदगी में न चल पाया कभी ठीक से
फिर भी खुद को तनसुख कहता है.
गर मिले सकूं तन और मन से 'सहर'
तो हर कोई इसे परमसुख कहता है.

नया दौर

याद आ रही हैं वो पुरसुकून रातें
करते थे देर तक चाँदनी में बातें.
जल्दी से अपने जेहन में बिठा लो
अब हैं कहाँ वो कलम और दवातें.
गया दौर उनका ये कोई कैसे जाने
हर घड़ी सजती हैं जुर्म की बारातें.
आकर सुना दे तू दो बोल प्यार के
लगती हैं कहाँ अब इनकी जमातें.
नफरत के धागों से बंधें हैं 'सहर'
आओ मिलके कोई नया सूत कातें.

तारों की बारात

अंधेरी रात में
तारों की बारात ने
फिर आमंत्रित किया है
सूरज को!
तुम नई सुबह लेकर आना
मेरी रोशनी में
तुम नजर नहीं आते
तुम्हारी रोशनी में
मेरा वजूद खो जाता है.
मुझे देख कर जहां सो जाता है
तुम्हें देख कर ये जग जाता है.
लेकिन तुम्हारे इस आने–जाने में
कुछ न कुछ तो खो ही जाता है!

दिन

वो दिन भी क्या दिन थे
हर दिन बे–फिक्र रहते थे!
कैसे दिन आ गए हैं अब?
बीते दिन याद करते हैं!
दिनों का फेर है ऐसा कि
दिन आते हैं चले जाते हैं
अच्छे दिन भूल जाते हैं
तो बुरे दिन याद आते हैं!

वायु

हर जगह पर मिलती हूँ
मुझे महसूस कर लेना
कभी थकती नहीं हूँ मैं
मुझे दिन–रात है चलना.
न मेरा देश है कोई
न कोई वेश है मेरा
न कोई मेरा मजहब है
न कोई आशियाँ मेरा.
मैं सबकी प्राण–वायु हूँ
मुझे साँसों में ढलना है.
कोई भी रोक न पाए
मुझे हर वक्त चलना है!

धूप

खिलती हूँ रोशनी बन
ओस की सुन्दर बूंदों में
चमकती हूँ मोतियों सी
सुन्दर सुनहरे सपने बन!
मैं ढलती हूँ मधुर मुस्कान
बन जब फूल खिलते हैं
नहीं दिखता है कोई रंग
मुझ में सब रंग मिलते है!
मैं बाँटूं रोशनी सबको
बिना किसी भेद–भाव के
नहीं छोटा बड़ा कोई
समझूं इक जैसा सबको!

पानी

पहचान, न कर नादानी
मैं अविरल बहता पानी
युगों से यूं ही बहता आया
नहीं कोई भी मेरा सानी
मैं अविरल बहता पानी.
राह कोई भी रोक न पाए
मेरी मंजिल खुद आ जाए
मैं अविरल बहता पानी.
प्यासी धरती का जीवन
ये हरियाली जन–जीवन

गोरैया

सराबोर हैं पानी से सब ताल–तलैया,
कहाँ जा रही हमें छोड़ कर तुम गोरैया?
राह देखते हैं तेरी खेत और खलिहान
न हो निष्ठुर इतना इनका कहना मान
चीं–चीं करके कौन सुनाएगा अब गीत
पास नहीं होगा जब इनके मन का मीत
जल्दी से आ जाओ पुकारे तुमको छैंया
कहाँ जा रही हमें छोड़ कर तुम गोरैया?
सुबह–सवेरे उठ कर सुनते तेरे गीत
किसे बनाएंगे बच्चे अब मन का मीत?
तेरे मीठे कलरव जैसा न कोई और है
आ जा अब तू यहीं पे तेरा ठौर है
सूनी है बगिया सारी और ताल–तलैया
कहाँ जा रही हमें छोड़ कर तुम गोरैया?
कीड़े–मकोड़े खाकर गुजारा करती थी
मेहनत के दम पर भलाई करती थी
दाना–तुनका जो खाया सो अच्छा है
औरों के घर से अपना घर अच्छा है
चूजे तुम्हें पुकारें आओ मेरी मैया
कहाँ जा रही हमें छोड़ कर तुम गोरैया?

गजल 1

तुझ में हिम्मत है तो मिला आँखें
देंगी हर जख्म का सिला आँखें.
तूने नजरें ही फेर ली आखिर
तुझ से करती भी क्या गिला आँखें.
आँखों ने आँखों ही में देख लिया
सब बता देंगी बे– वफा आँखें.
इनसे मिलकर ही मुझको चौन मिला
कहते हैं दिल की है दवा आँखें.
इनकी गहराइयों में खो जाना
कितनी प्यारी है बा–वफा आँखें.
आँखों को आँखें तुम न दिखलाना
वरना हो जाएँगी खफा आँखे.
प्यार आ जाए गर इन आँखों में
इनसे होती नहीं जुदा आँखें.
भूलने वाले तुझको क्या मालूम
तेरा तकती हैं रास्ता आँखें.
उसके एहसान हैं बहुत मुझ पर
देती हैं आज तक दुआ आँखें.
दोस्तों इतना ध्यान रखना सदा
होती हैं दिल का आइना आँखें.
शर्म बाकी रही 'सहर' इनमें
वरना कर देती क्या से क्या आँखें.

गजल 2

तेरी आँखों से जो गिरा आंसू
मेरे गम से है आशना आंसू.
दिल में तेरा ख्याल आते ही
साथ मुझको ही ले गया आंसू.
गर जुबां कुछ भी बोल न पाए
दर्दे–दिल की है इक सदा आंसू.
जिनको पलकों पे हम बिठाते हैं
उनसे होते नहीं जुदा आंसू.
यूं ही आँखों को नम नहीं करते
सब गमों की है इक दवा आंसू.
खून के घूँट जो पिलाता हैं
उसकी खातिर न बहेगा आंसू.
खास रिश्ता गमों से इनका है
हर खुशी में है एक सजा आंसू.
गम से लेकर खुशी के दामन तक
इब्तिदा आंसू, इन्तिहा आंसू.
मरहले जीस्त में कुछ ऐसे थे
घुट के आँखों में रह गया आंसू.
अब 'सहर' इनको यूं ही बहने दो
कहते हैं दिल की है शिफा आंसू.

गजल 3

महकी यादों का हमसफर गुलशन
क्यूं उजड़ता है मोत'बर गुलशन.
जब भी बिगड़ा मिजाज मौसम का
सबको देता है सब खबर गुलशन.
सबको इससे ही प्यार हो जाए
ये वतन जैसे मेरा घर गुलशन.
गरचे देखा गलत नजर से इसे
लेगा तुम जैसों की खबर गुलशन.
गर खिजाओं की दस्तकें आएं
रोने लगता है खासकर गुलशन.
रोजे–महशर तलक रहे कायम
ये वतन मेरा, मेरा घर गुलशन.
बागबानों पे ही नजर रखना
हो न जाए ये दर–बदर गुलशन.
सब अँधेरे खिजां के साथ गए
क्यूं न देखे नई सहर गुलशन.

गजल 4

जिंदगी की हुई हवा चिड़िया
उड़ गई दिल की बेवफा चिड़िया
दाना दाना कहीं भी बिखरा हो
ढूँढ लेती है रास्ता चिड़िया
दुनिया में अमन की निशानी है
सबकी प्यारी है बावफा चिड़िया
तेरे दम से भरम है दुनिया का
होगी नफरत कभी हवा चिड़िया
गुल खिलेंगे यहाँ मोहब्बत के
एक दिन ऐसा आएगा चिड़िया
कोई छोटा बड़ा नहीं होता
निगहेबां सबका है खुदा चिड़िया
सूनी सूनी है डाल गुलशन की
यहीं होगा मकां तेरा चिड़िया
'सहर' मिलकर के प्यार से रहना
दर्स देती है ये सदा चिड़िया

गजल 5

हर गली में ये कैसी दहशत है
सबके दिल में ऐसी वहशत है
गुन–गुनाएंगे प्यार का नगमा
सब रहें मिलके ये ही चाहत है
अपने मतलब की बात ये करते
कैसे समझेंगे कैसी दिक्कत है
लड़ रहे आज हम यूं ही खुद से
बेखुदी में ये कैसी नफरत है
फिक्र है सबको यहाँ अपनों की
कैसी मतलब की ये हुकूमत है
नजर उठाकर जो कोई देखे 'सहर'
फना होगा वो हम में ताकत है.

गजल 6

तेरे आने से ये हमदम हुआ है
खुशी के साथ थोडा गम हुआ है.
तेरी इक याद की वुसअत के बाईस
मेरा दिल खुश्क था पुरनम हुआ है.
रहा तन्हाइयों में भी न तन्हा
वो मेरी सांस का हमदम हुआ है.
तेरे मिलने से पहले दर्द जो था
बिछुड़ने से कहीं कुछ कम हुआ है?
सहर मुझको अजब राहत मिली है
जिगर का जख्म जो मरहम हुआ है.

गजल 7

लगता है इक लाश, जमाने का आदमी
सीखता है ढंग, कमाने का आदमी.
करता रहा खामोश ये दुनिया को इस तरह
है कुछ भी नहीं पास, बताने का आदमी.
मानता है खुद को, मगर कुछ नहीं पता
हो गया ये खुद ही, भुलाने का आदमी.
तोड़ता रहा है ये दिल, जाने किस तरह
बहला रहा है दिल, यूं लगाने का आदमी.
आया नहीं है काम, कभी दूसरों के ये
क्यूं दिख रहा है ऐसे, दिखाने का आदमी.
लेता है छीन चौन, जमाने में सभी का
कहने लगे हैं लोग, सताने का आदमी.
सूझे नहीं है गीत 'सहर', कोई प्यार का
खामोश हो गया है, तराने का आदमी.

गजल 8

मेरे हिस्से की इक वफा दे दे
फिर जो चाहे तू वो सजा दे दे.
फिर सुलग उठ्ठे दर्द के शोले
कोई आए इन्हें हवा दे दे.
रास्ते से जो लोग भटके हैं
उनको मंजिल की तू दुआ दे दे.
दर्द बाकी रहे न इन्सां में
इसकी ऐसी कोई दवा दे दे.
ताजगी सब दिलों में ताजा रहे
महकी महकी सी बस फजा दे दे.
कितने चेहरे हैं साफ देख सकूं
मुझको ऐसा ही आइना दे दे.
कहर बरपा है जालिमो का खुदा
इनको तू हक्नुमा सजा दे दे.
रात के बाद तो सहर होगी
दिन भी हमको तू खुशनुमा दे दे.